श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चूलगिरि विधान

पूजन-आरती-चालीसा स्तोत्र-भजन संग्रह

विधान का मांडना

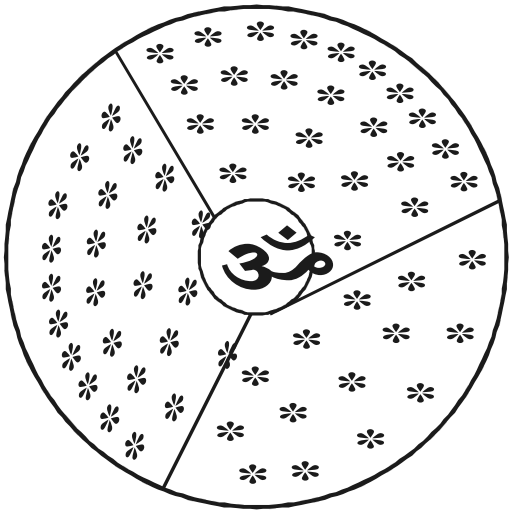

मध्य में - ॐ
प्रथम वलय - 24 अर्घ्य
द्वितीय वलय - 24 अर्घ्य
तृतीय वलय - 14 अर्घ्य
कुल - 62 अर्घ्य

रचयिता : प.पू. आचार्य विशदसागरजी महाराज

कृति - श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चूलगिरि पूजन-आरती-चालीसा स्तोत्र विधान संग्रह

कृतिकार - प.पू. साहित्य रत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज

संस्करण - प्रथम-2016 प्रतियाँ -1000

संकलन - मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज

सहयोग - क्षुल्लक श्री 105 विसौमसागरजी, क्षुल्लिका श्री भक्तिभारती, क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती

संपादन - ब्र. ज्योति दीदी 9829076085 , आस्था दीदी 9660996425 सपना दीदी . 9829127533

संयोजन - सोनू दीदी, आरती दीदी

प्राप्ति स्थल -
1 जैन सरोवर समिति, जयपुर
सुरेश सेठी, मो. 9413336017
2. श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चूलगिरि, जयपुर
देव प्रकाश खण्डाका मो. 9829063163
3. विशद साहित्य केन्द्र-हरीश जैन
गाँधी नगर, दिल्ली मो. 981815971, 9136248971
4. विशद विशाल त्यागी भवन
सिद्धार्थ नगर-जयपुर मो. 93145-15597, 09667140858

पुण्यार्जक

श्री सुभाषचन्द अजमेरा, पुष्पा अजमेरा
ऋषभ, रितिका, दीपिका अजमेरा
जयपुर, फोन : 8890047230

श्री नरेन्द्र कुमार जैन-श्रीमती मंजू जैन
48, नारायण नगर, टोंक रोड, जयपुर (राज.)

_wDH$: amOy J«m{\$H$ AmQ>© , जयपुर ● फोन: 2313339, मो: 9829050791

क्षेत्र परिचय

चूलगिरि ज्ञान-ध्यान-साधना का केन्द्र

सन् 1953 की वैशाख कृष्णा द्वितीया, भगवान पार्श्वनाथ के गर्भकल्याणक दिवस पर आचार्यरत्न प्रातः स्मरणीय 108 श्री देशभूषण जी महाराज ने इस पर्वतीय क्षेत्र पर सामायिक करने का निश्चय किया। पर्वत की तपन, भीषण गर्मी तथा चढ़ाई की दुरूहता निर्ग्रन्थ मुनिराज के संकल्प में बाधा नहीं बन पाई। पर्वत के नुकीले पत्थर, काँटों से भरे झाड़-झंखाड़ के उपरान्त उन्होंने अपने लिये मार्ग बना लिया और आचार्यवर यथासमय अपनी लक्षित भूमि पर सामायिक में लीन हो गये। उन्होंने अपने भक्तों को इसी स्थान पर साधना कुटीर के निर्माण के भाव से अवगत कराया। धार्मिक चेतना से लोक आस्था जुड़ जाती है तो दुर्गम भी सुगम होकर सिद्धि हो जाती है, अतिशय हो जाता है। जयपुर नगर के दक्षिण-पूर्वी अंचल में जयपुर-महावीरजी मार्ग पर श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री पार्श्वनाथ, चूलगिरि ऐसी ही सिद्धि है, जो आज देशभर के दिबर जैन धर्मावलम्बियों के लिए अतिशय क्षेत्र बन गया है।

सन् 1953 की पौष कृष्णा एकादशी को आचार्यश्री के सान्निध्य में पर्वतीय शिखर पर भगवान पार्श्वनाथ का जन्म कल्याणक महोत्सव आयोजित किया गया। आचार्यश्री ने शिखर का नामकरण 'चूलगिरि' किया श्रावकों के मध्य चूलिगिर पर तीर्थंकर पार्श्वनाथ के श्रीचरण एवं एक साधना कुटीर के निर्माण का संकल्प किया गया। श्रद्धा, भक्ति व समर्पण ने पर्वत को वन्दनीय बना दिया। अनेक अतिशय अपने आप में जागृत हो उठे।

मूलनायक भगवान पार्श्वनाथ की वेदी को सन् 2005 में सुन्दर कलात्मक नई वेदी बनाकर गर्भगृह को स्वर्ण मंडित किया गया। इसी प्रकार भगवान नेमीनाथ व भगवान महावीर की वेदियों का सुन्दर कलात्मक, स्वर्णमयी गर्भगृह सन् 2006 में सम्पूर्ण हुआ। अप्रैल, 1966 में भगवान पार्श्वनाथ की मूलनायक खड्गासन प्रतिमा के साथ-साथ महावीर, भगवान नेमीनाथ, चौबीसी एवं यंत्रों की प्रतिष्ठा के लिए पंचकल्याणक महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। चूलगिरि पर देवाधिदेव भगवान पार्श्वनाथ की सात फुट ऊँची श्यामवर्णीय पाषाण की खड्गासन प्रतिमा मूलनायक के रूप में तथा इसके निकट निर्मित दो अन्य वेदियों में भगवान महावीर व भगवान नेमीनाथ की साढ़े तीन फुट ऊँची धवल पाषाण की पद्मासन प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित की गई। भगवान पार्श्वनाथ की परिक्रमा में 28 गुमटियों में 24 तीर्थंकरों की पद्मासन प्रतिमाएँ एवं चार चरण प्रतिष्ठित किये गये। एक अतिरिक्त निर्मित कक्ष में मातेश्वरी पद्मावती देवी को विराजमान किया गया। पूजा-प्रक्षाल हेतु पहाड़ पर शुद्ध जल हेतु एक लघु टाँके का निर्माण कराया गया। चूलगिरि पर निर्माण कार्यों का प्रथम चरण इस तरह पूर्ण हुआ। अतिशय क्षेत्रों के निर्माण कार्य को कभी विराम नहीं मिलता, करनी चलती है तो चलती ही रहती है। चूलगिरि पर निर्माण चलता ही रहा है। क्षेत्र का स्वरूप भी निखरता एवं सँवरता रहा है।

सन् 1982 में आचार्यरत्न 108 श्री देशभूषणजी महाराज ससंघ जयपुर पदार्पण पर 10 से 15 मई, 1982 तक पुनः दूसरा पंचकल्याणक आयोजित किया गया। देश के कोने-कोने से श्रद्धालु भक्तों ने असीम उत्साह एवं श्रद्धा से इसमें भाग लिया। भगवान महावीर की श्वेत पाषाण से निर्मित 21 फुट ऊँची पद्मासन प्रतिमा चूलगिरि क्षेत्र के जिस भाग में प्रतिष्ठित की गयी उस विशाल प्रांगण का नामकरण हो गया 'महावीर चौक'। महावीर चौक 75ह्न65 फुट के आकार का है तथा प्रतिमाजी पर 60 फुट ऊँचाई के विशाल शिखर का निर्माण हो चुका है। भगवान महावीर चौक में मूल प्रतिमाजी के पार्श्व में श्रद्धालुओं द्वारा प्रतिमाजी का अभिषेक करने हेतु एक पक्के मंच का निर्माण कराया जा चुका है। 40ह्न40 फुट आकार की पर्वत गुफा का निर्माण कराया गया। पर्वत गुफा में चौबीस तीर्थंकरों की सवा दो-दो फुट की खड्गासन प्रतिमाएँ प्रतिष्ठित की गई। यह सम्पूर्ण दीर्घा संगमरमर पाषाण से निर्मित है जो अत्यन्त मनोहारी है। इस दीर्घा के मध्य में एक अन्य जिनालय में भगवान आदिनाथ, भरत एवं बाहुबली भगवान की खड्गासन प्रतिमाएँ तथा दो शासन देवियों ज्वालामालिनी तथा चक्रेश्वरी के विग्रह हैं, यह जिनालय भी संगमरमर पाषाण से निर्मित है। यह स्थान साधना के लिए अति उपयुक्त है। इस जिनालय की भव्यता इस पर हुए स्वर्ण के कार्य से मनोहारी है।

चूलगिरि पर 'ऋद्धि-सिद्धिदायक विजय पताका महायंत्र' इस क्षेत्र का विशेष अतिशय है। 40 किलोग्राम ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण यह महायंत्र 4ह्न4 फुट वर्गाकार आकृति में है। महायंत्र में 6561 कोष्ठक हैं तथा यंत्र में स्वर व व्यंजन, मंत्र, जाप्य, स्वास्तिक चिन्ह, मानस्तम्भ, अर्हन्तपूर्ति श्रुत अक्षर तथा जैन यक्ष-यक्षिणियों के नाम उत्कीर्ण हैं। जनप्रभावना सिद्ध करती है कि यह महायंत्र सर्वप्रकार संकटमोचक है।

क्षेत्र के अधिकृत समस्त परिसर के चारों ओर सुरक्षा एवं वन सम्पदा की रक्षार्थ 10 फुट ऊँची पक्की दीवार निर्मित की जा चुकी है। इसे सदैव हरा-भरा बनाये रखने के लिए हजारों की संख्या में विविध वृक्ष लगाये जा चुके हैं।

महाराजश्री द्वारा प्रबन्धकारिणी कमेटी की घोषणा- आचार्य श्री देशभूषणजी महाराज के अक्टूबर सन् 1982 में जयपुर से कोथली के लिए प्रस्थान करने से पूर्व जयपुर शहर में स्थित महावीर पार्क में एक वृहद् सभा का आयोजन किया गया, जिसमें महाराजश्री ने चूलगिरि के लिए प्रबन्धकारिणी कमेटी की घोषणा की। जिसमें श्री प्रवीणचन्द छाबड़ा संरक्षक, स्व. श्री फूलचन्दजी जैन अध्यक्ष व श्री सुमेरचन्द सोनी मंत्री पद की कार्यकारिणी के सदस्यों की घोषणा की। महाराजश्री ने उपस्थित सभी समुदाय को जोर देकर कहा है कि चूलगिरि आपकी है। इसका वैभव जयपुर जैन समाज का वैभव है।

सड़क एवं सीढ़ी मार्ग- अक्टूबर सन् 1982 के बाद चूलगिरि द्रुतगति से उत्तरोत्तर वृद्धि की ओर अग्रसर हुआ। सर्वप्रथम यात्रियों के आने के लिए सुलभ सीढ़ी मार्ग बनाने की ओर अग्रसर हुआ। 6 इंच ऊँचाई वाली 1008 सीढ़ियों के निर्माण में डेढ़ से दो वर्ष का समय लगा। तलहटी से यात्रियों के लिए चूलगिरि तक पहुँचने के लिए सड़क एवं सीढ़ी मार्ग निर्मित है। चूलगिरि

क्षेत्र के 5 कि.मी. लम्बे इस श्रमसाध्य मार्ग को बनाने में 2 वर्ष का समय लगा। इस मार्ग का निर्धारण 1966 में देशभूषण महाराज ने पदविहार करते हुए किया। जिससे कच्चा सड़क मार्ग आवागमन के लिए तैयार हुआ। बाद में 1989 से 1991 के वर्षों में सड़क को पक्का आदि करने का सम्पूर्ण कार्य किया। समस्त सड़क की मरम्मत समय-समय पर कराई जाती है। जिससे सड़क मार्ग अब 12 महीनों अबाध गति से चलता है। इस कार्य के सम्पूर्ण होते-होते क्षेत्र की सुरक्षा हेतु सम्पूर्ण क्षेत्र पर 5 फुट ऊँची दीवार का निर्माण कराया गया। इससे क्षेत्र की सुरक्षा के साथ-साथ हमारा कब्जा सरकार द्वारा दिये गये क्षेत्र पर सम्पूर्ण हुआ। कुछ समय बाद इस दीवार को और अधिक सुरक्षित करने के लिए 5 फुट बढ़ाई गई। 1008 सीढ़ियों के मार्ग से 15 से 20 मिनट की अवधि में शिखर तक पहुँच सकते हैं। सीढ़ी मार्ग विश्राम के लिए तीन विश्राम स्थली भी निर्मित हैं। निजी वाहन वाले यात्री 5 किलोमीटर के सड़क मार्ग से शिखर तक 10 मिनट में सहजता से पहुँचते हैं। सड़क मार्ग इतना सुलभ एवं सुरम्य है कि दुपहिया वाहन भी 10 मिनट में मन्दिर तक पहुँच जाता है। सड़क मार्ग पर घुमाव वाले स्थानों पर भारी भरत कर चौड़ा किया गया है। इस सुविधा से बड़ी बस व ट्रक आदि सब सुगमता से शिखर तक पहुँचने लगे हैं। सड़क की सार-सँभाल नियमित रूप से कराई जाती है। सड़क के दोनों ओर वृक्षारोपण कर हरियाली की गई है। चढ़ाई के पश्चात् 2 किलोमीटर सड़क सीमेन्टेड निर्मित है। इस अनुपम दृश्य के लिए सड़क के पूर्वी छोर पर 1000 फुट लम्बी व 6 फुट ऊँची जालनुमा बेरीकेट किया गया है। इससे क्षेत्र की हरियाली व सुन्दरता को चार चाँद लगे हैं।

श्री देशभूषण निलय- सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त 52 कमरों वाला देशभूषण निलय बाहर से आने वाले यात्रियों के आवास हेतु क्षेत्र पर निर्मित है। निलय में सर्दी-गर्मी के लिये आवश्यक बिस्तर, पंखे आदि की व्यवस्था सशुल्क उपलब्ध है। दो बड़े हॉल सभा-गोष्ठी आदि के लिए उपलब्ध हैं।

बस सेवा- यात्रियों के लिए क्षेत्र पर आने व जाने के लिए क्षेत्र की प्रबन्ध समिति की ओर से नियमित बस सेवा सशुल्क उपलब्ध रहती है।

व्हील चेअर व्यवस्था- वृद्ध एवं शारीरिक रूप से अशक्त यात्रियों को दर्शन लाभ कराने हेतु क्षेत्र पर व्हील चेअर सुविधा उपलब्ध है।

भोजनालय एवं जलपानगृह- सूर्यास्त के पूर्व भोजन के लिए अत्याधुनिक ढंग से निर्मित भोजनालय कक्ष में गैस संचालित भोजन व्यवस्था की गई है। भोजनशाला में एक समय में 50 यात्रियों के बैठने की व्यवस्था है। समाज द्वारा आयोजित की जाने वाली गोठ-घुघरियों के सुविधार्थ अलग से आच्छादित पंखों सहित समुचित स्थान व रसोइयों का प्रबंध किया गया है। खाना बनाने के बर्तन, लकड़ी, छाने, पानी, रोशनी आवश्यकता अनुसार उपलब्ध कराये जाते हैं। धार्मिक उत्सवों पर बड़े भोज के लिए पूर्व सूचना पर यात्रियों के लिए उचित व्यवस्था की जाती है। दर्शनार्थियों के लिए क्षेत्र पर एक सुव्यवस्थित जलपानगृह का निर्माण कराया जा चुका है। जलपानगृह में गर्मी-सर्दी के पेय व अल्पाहार हमेशा उपलब्ध रहते हैं।

निर्मल-रत्न ध्यान केन्द्र- ज्ञान, ध्यान व साधना के लिए आधुनिक व वैज्ञानिक स्वरूप सहित इस केन्द्र का निर्माण कराया गया है। प्रकृति व पहाड़ों की हरियाली के वातावरण को बनाये रखना इस स्थान की विशेषता है। यहाँ स्त्री-पुरुष निर्विघ्न ध्यान व साधना कर आध्यात्मिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। उत्तरी भारत के तीर्थ-स्थलों में यह एक अनुपम ध्यान केन्द्र है।

धार्मिक विधि-विधान- जयपुर शहर व देश के विभिन्न प्रदेशों से भक्तजन समय-समय पर चूलगिरि क्षेत्र पर आकर अष्टाह्निका, शान्ति विधान व वृहद् स्तर पर विशेष विधानों का आयोजन करते हैं। दिगम्बर जैन आम्नाय के अनुसार किये जाने वाले सभी धार्मिक आयोजनों के लिए पूजा सामग्री, पूजा उपकरण, मण्डप माँड़ना, विधान कराने वाले विद्वान् आदि की समुचित व्यवस्था क्षेत्र पर उपलब्ध रहती है। मन्दिर प्रांगण में पूर्व में निर्मित तीनों वेदियों भगवान पार्श्वनाथ की वेदी दिनांक 22-7-2005 एवं भगवान नेमिनाथ व भगवान महावीर की वेदी 24-9-2006 को पुनः कलात्मक, सुन्दर व जालीदार कवर करके बनाया गया। इन सबके पश्चात् पार्श्वनाथ चौक में पूजनार्थियों के बैठने के लिए व्यवस्था नहीं थी। वर्षा, धूप आदि में परेशान होते थे। इसके लिए चौक को छपाकर वृहद् रूप दिया गया, जिससे चूलगिरि पर विधि-विधान, पूजन आदि सुरक्षा में होने लगी। आज हर माह में करीब-करीब 7-8 विधान आनन्दपूर्वक गाजे-बाजे के साथ सम्पन्न होते हैं। चूलगिरि के समीप ही 4 किमी. दूरी पर श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र शांतिनाथ खोह में प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज, मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज ससंघ सानिध्य में हुए वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव की स्मृति में चूलगिरि विधान का प्रकाशन हुआ।

मन्दिर का प्रवेश द्वार-संगमरमर का कलात्मक 7 छतरियों वाले विशाल प्रवेश द्वार का निर्माण किया गया। मन्दिर का प्रवेश द्वार शोभनीय व भव्य है। इसके निर्माण में दो वर्ष का समय लगा जो जुलाई 2011 में सम्पूर्ण हुआ। इस कलात्मक भव्य प्रवेश द्वार से मन्दिर की भव्यता का निखार हुआ है।

चैत्यालय- अभी हाल ही में चैत्यालय का पुनर्निर्माण किया गया है। पूर्व में पूजनार्थियों के बैठने के लिए समुचित व्यवस्था का अभाव था। बीच के सारे पिलर वगैरह हटाकर संगमरमर की फर्श व दीवारों पर मार्बल लगाकर भव्यता की गई। अब चैत्यालय का रूप निखरकर सुविधायुक्त है।

बहुमूल्य रत्नों की प्रतिमाओं का जिनालय- बहुमूल्य रत्नों की प्रतिमाओं को विराजमान करने हेतु चूलगिरि क्षेत्र पर एक अत्यधिक सुरक्षित व्यवस्था सहित संगमरमर के कलात्मक जिनालय का निर्माण अप्रैल, 2002 में कराया जा चुका है। जिनालय में नौ रत्नों सहित स्वर्ण, चाँदी की प्रतिमाएँ अलौकिक हैं, मंगल हैं। दर्शनार्थी इनके दर्शन कर अविभूत हैं।

आचार्य श्री देशभूषण कक्ष- पूर्व में देशभूषण कक्ष साधना हेतु काफी छोटा व सुविधायुक्त नहीं था। अभी हाल ही में देशभूषण कक्ष को बढ़ाकर एक बड़े हॉल के रूप में परिवर्तित किया

गया है। संगमरमर से निर्मित फर्श व साइड की दीवारें भव्यता को लिए हुए हैं। महाराज की मूर्ति रखने के स्थान को नई कलात्मक वेदी बनाकर विराजमान किया गया है। महाराज की मूर्ति अपने में स्वयं आकर्षण व वन्दनीय है।

क्षेत्र पर सुरक्षा– अभी हाल ही में क्षेत्र पर सी.सी.टीवी लगाया गया है। 16 कैमरों के द्वारा सम्पूर्ण चूलगिरि की गतिविधियों व कार्यकलापों पर नजर रखी जाती है व उन्हें रिकार्ड किया जाता है। इससे कोई भी अनहोनी घटना को रिकार्ड किया जाकर सावचेती बरती जा रही है।

त्यागी व्रतियों की आहार व्यवस्था– त्यागी–व्रतियों के लिए (शोध) खाना बनाने व खाने की व्यवस्था हेतु अतिरिक्त रूप से सुन्दर कक्ष का निर्माण कराया गया है। सुव्यवस्थित रसोई व बर्तनों आदि की व्यवस्था उपलब्ध है।

स्वाध्याय कक्ष– क्षेत्र की बढ़ती हुई आवश्यकताओं के अनुरूप यह निर्णय लिया गया कि जिनवाणी कक्ष (स्वाध्याय कक्ष) का नवनिर्माण चूलगिरि क्षेत्र की ख्याति के अनुरूप प्रबन्ध समिति द्वारा सुन्दर व वृहद् रूप से परिवर्तित किया जावे, जिसके अनुसार इसका नवनिर्माण किया जा रहा है। क्षेत्र पर पूर्व से ही प्राचीन–नवीन धार्मिक ग्रन्थ उपलब्ध हैं। इसमें अभ्यार्थियों के लिए धार्मिक महत्त्व के दुर्लभ साहित्य को उपलब्ध कराने के प्रयास किये जा रहे हैं।

प्रवचन हॉल– क्षेत्र की आवश्यकताओं को देखते हुए महसूस किया जा रहा था कि क्षेत्र पर साधु–साध्वियों के प्रवचन व यात्रियों के लाभार्थ कोई समुचित स्थान नहीं है। इसके लिए कार्यकारिणी में विचार–विमर्श कर यह निर्णय लिया गया कि पश्चिम की ओर खाली स्थान है उस स्थान पर निर्माण करा लिया जाए। क्षेत्र के वैभव को देखते हुए दातार ने इस हेतु वातानुकूलित हॉल बनाने का सद्विचार हमारे सामने रखा जिसे स्वीकार कर आर्किटेक्ट से नक्शे बनवाकर निर्माण करवाया गया। प्रवचन हॉल सभी आधुनिक सुविधाओं सहित बनकर तैयार है।

सुलभ केन्द्र सुविधाएँ– स्त्री–पुरुषों के लिए क्षेत्र पर आधुनिक ढंग से निर्मित अलग–अलग सुविधा व सुलभ केन्द्र उपलब्ध हैं, जिसकी नियमित रूप से प्रतिदिन साफ–सफाई की व्यवस्था है। सभी कक्षों में एक्जास्ट फेन लगाए गए हैं व ओडोनिल एवं हाथ धोने के लिए साबुन की सुचारु व्यवस्था की गई है।

स्थायी पूजा योजना– स्थायी पूजा योजना के अन्तर्गत दातार द्वारा निर्दिष्ट राशि 1500 रुपये जमा कराये जाने पर उसके द्वारा निश्चित किये गये दिन पूजा का आयोजन किया जाता है। दातार को पूजा में सम्मिलित होने हेतु इसकी सूचना पोस्ट द्वारा 15 दिन पूर्व प्रेषित कर दी जाती है।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चूलगिरि की समस्त व्यवस्थाएँ आचार्यरत्न 108 श्री देशभूषणजी महाराज के निर्देशानुसार उनके आशीर्वाद से गठित एक न्यास के तत्वावधान में संचालित हैं। यह न्यास राजस्थान सरकार के देवस्थान विभाग से पंजीबद्ध है तथा समय–समय पर गुरुदेव आचार्य 108 श्री विद्यानन्दजी मुनिराज का आशीर्वाद प्राप्त करते हुए अपने कार्यों को संचालित करता रहा है।

दानदाताओं एवं समाज के सभी वर्गों के असीम एवं हार्दिक सहयोग से जो विकास कार्य हुए हैं और इतने अल्प समय में ही श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चूलगिरि देश के प्रख्यात ऐतिहासिक एवं अतिशयकारी तीर्थ–स्थानों में अपना जो महत्वपूर्ण स्थान बना पाया है, वह चूलगिरि के मूलनायक भगवान 1008 श्री पार्श्वनाथ की अनुकम्पा का प्रभाव है। चूलगिरि की प्रबन्ध समिति शेष विचाराधीन कार्यों को शीघ्र पूरा कराने में सभी धर्मानुरागी बंधुओं से अनुरोध करती है कि वे खुले हृदय से आगे आकर इन कार्यों की पूर्ति में तन–मन–धन से अधिकाधिक सहयोग कर पुण्य लाभ अर्जित करें।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री पार्श्वनाथ चूलगिरि– हमें आपके सहयोग एवं मूल्यवान सुझावों की सदैव प्रतीक्षा रहेगी। चूलगिरि पधारने का हमारा आमंत्रण स्वीकार कर हमें अनुगृहीत करें। तीर्थ क्षेत्रों के निर्माण की कोई अन्तिम करनी नहीं होती। हमारा विश्वास है कि चूलगिरि क्षेत्र का विकास कार्य भी सदैव गतिशील रहेगा। क्षेत्र पर विकास कार्य गतिशील है। हमें विश्वास है कि क्षेत्र की प्रगति उत्तरोत्तर इसी प्रकार होती रहे व रहेगी। इसके लिए सद्भावना, प्रेरणा व सहयोग हमें इसी प्रकार निरन्तर प्राप्त होता रहेगा।

आचार्य श्री वीरसागरजी, आचार्य श्री शिवसागरजी, आचार्य श्री विमलसागरजी, आचार्य श्री बाहुबलीजी, आचार्य श्री विरागसागरजी, आचार्य श्री विशदसागरजी आदि अनेक आचार्यों की चरण रज से क्षेत्र पवित्र हुआ।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री पार्श्वनाथ, चूलगिरि की प्रबन्धकारिणी समिति

1.	श्री प्रवीण छाबड़ा	संरक्षक	2720424
2.	श्री बलभद्र कुमार जैन	अध्यक्ष	2600255
3.	श्री नेमप्रकाश खण्डाका	उपाध्यक्ष	2205607
4.	श्री सुमेर कुमार पाण्ड्या	उपाध्यक्ष	2602862
5.	श्री डॉ. सुभाषचन्द्र काला	मंत्री	2603251
6.	श्री विजय कुमार सौगाणी	सहमंत्री	2761950
7.	श्री राजेन्द्र के. शेखर	कोषाध्यक्ष	2552585
8.	श्री सुदीप सोनी		2362717
9.	न्यायाधिपति श्री मिलापचन्द जैन	सदस्य	2293220
10.	श्री ज्ञानचन्द अजमेरा	सदस्य	2605233
11.	श्री बच्छराज पाण्ड्या	सदस्य	2294389
	सहयोग सदस्य		
1.	श्री अशोक कुमार पाण्ड्या पार्षद		2573003
2.	श्री राजकुमार कोठ्यारी		2313421
3.	श्री बसन्त कुमार बगड़ा		

चूलगिरि क्षेत्र फोन : 0141–2170773–5171100

चूलगिरि की महिमा

भारत एक धर्मप्राण तथा सन्त महर्षियों का देश है। महान् सन्तों व ऋषियों द्वारा प्रतिपादित धर्म-विज्ञान के सिद्धान्तों के कारण ही भारत धर्म तथा अध्यात्म के क्षेत्र में जगतगुरु कहलाता है। किन्तु इस देश में मात्र ज्ञान की ही पूजा नहीं होती, पूजनीय और वन्दनीय कहलाने के लिए ज्ञान और चारित्र दोनों का होना अनिवार्य माना जाता है। भारत में सभी महापुरुष ज्ञान-तप-त्याग सेवा और वीतरागत्व के कारण ही वन्दनीय हुए हैं। आचार्य श्री 108 देशभूषणजी महाराज के संघ को दो बार दक्षिण भारत से उत्तर भारत लाने का श्रेय खण्डाका परिवार को जाता है। आचार्य श्री देशभूषणजी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन में ही खानियाँजी, राणाजी की नसियाँ के ऊपर पहाड़ी पर भव्य चूलगिरि का निर्माण हुआ।

आचार्य श्री वीरसागरजी महाराज द्वारा दीक्षित गणिनी आर्यिका 105 श्री सुपार्श्वमती माताजी ने यहीं दीक्षा ग्रहण की एवं इसी राणाजी की नसियाँ में आचार्य श्री वीरसागरजी महाराज ने समाधि ग्रहण कर नश्वर शरीर का त्याग किया। आचार्य श्री बाहुबलीसागर जी महाराज की समाधि भी यहीं हुई।

श्रीमान् सरदारमल जी खण्डाका की मातुश्री व ओमप्रकाश जी, नेमचन्द जी, देवप्रकाश जी, पदम जी विजयप्रकाश जी खण्डका की दादी ने परम पूज्य आचार्य श्री देशभूषण जी महाराज से दीक्षा ग्रहण कर आर्यिका श्री वृषभसेनामति माताजी नाम प्राप्त किया और यही चूलगिरि में ही समाधिपूर्वक नश्वर शरीर का त्याग किया।

गणेशजी राणा एवं राणा परिवार में से उनकी मातुश्री ने यहाँ संयमपूर्वक शरीर का त्याग किया। यह बात इसलिये कही कि राणाजी की नसियाँ जी भी तपोभूमि से कम नहीं है। अर्थात् तपोभूमि ही है। यहाँ पर भी अनेकानेक आचार्यों व मुनिराजों ने दीक्षा व समाधि ग्रहण की है व वर्षायोग धारण कर इस चूलगिरि की भूमि को पावन किया है।

आज चूलगिरि क्षेत्र जैन समाज में विशेष श्रद्धा का केन्द्र बन गया है। दूर-दराज से हजारों यात्री क्षेत्र पर दर्शन-पूजन कर अथाह-पुण्य का अर्जन कर रहे हैं। **प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज** ने चूलगिरि क्षेत्र को अपनी श्रद्धा का केन्द्र बनाते हुए क्षेत्र की पूजन-आरती-चालीसा-भजन आदि द्वारा अपनी श्रद्धा प्रकट की है। भक्तों को प्रभु से जुड़ने का पूजन-भक्ति-आराधना ही एक मात्र आलम्बन है। प्रस्तुत पुस्तक में क्षेत्र की विधिवत पूजन व अर्घावली दी है। दर्शन करते समय यह पुस्तक अपने साथ रखे।

वर्तमान में चूलगिरि क्षेत्र कमेटी व समाज के सहयोग से क्षेत्र का सर्वांगीण विकास तरक्की पर है। हमारा जन्म स्थान जयपुर ही है। चूलगिरि के प्रति बचपन से ही अच्छा लगाव था। हमने आचार्य श्री से निवेदन किया गुरुदेव आपने यों तो सैकड़ों पूजाएँ विभिन्न क्षेत्रों व तीर्थों की लिख दी पर जयपुर का जो हृदय स्थल चूलगिरि तीर्थ है। उस पर आपकी लेखनी नहीं चली गुरुवर ने हमारी विनय स्वीकार कर भक्तों को भक्ती से जुड़ने का आलम्बन प्रदान किया। गुरुवर के श्री चरणों में त्रिभक्ति पूर्वक नमोस्तु-3

नोट - (1) दर्शनार्थियों की सुविधा के हिसाब से यहाँ पदमासन व खड्गासन चौबीसी के अर्घ अलग-अलग दिए गए हैं। इसी क्रम से प्रतिमाओं के समक्ष अर्घ चढ़ाए। (2) चूलगिरि विधान करना हो तो संगीत की मधुर धुनों के साथ भारी उत्साह से यह विधान सम्पन्न करें।

-मुनि विशालसागर (संघस्थ) (वर्षायोग 2015-मानसरोवर-जयपुर)

मंगलाष्टक (हिन्दी)

(शम्भू छन्द)

पूजनीय इन्द्रों से अर्हत्, सिद्ध क्षेत्र सिद्धी स्वामी।
जिन शासन को उन्नत करते, सूरी मुक्ती पथगामी।।
उपाध्याय हैं ज्ञान प्रदायक, साधू रत्नत्रय धारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।1।।

नमित सुरासुर के मुकुटों की, मणिमय कांती शुभ्र महान्।
प्रवचन सागर की वृद्धी को, प्रभु पद नख हैं चंद्र समान।।
योगी जिनकी स्तुति करते, गुण के सागर अनगारी।
परमेष्ठी प्रतिदिन पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।2।।

सम्यक्दर्शन ज्ञान चरण युत, निर्मल रत्नत्रय धारी।
मोक्ष नगर के स्वामी श्री जिन, मोक्ष प्रदाता उपकारी।।
जिन आगम जिन चैत्य हमारे, जिन चैत्यालय सुखकारी।
धर्म चतुर्विध पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।3।।

तीन लोक में ख्यात हुए हैं, ऋषभादिक चौबिस जिनदेव।
श्रीयुत द्वादश चक्रवर्ति हैं, नारायण नव हैं बलदेव।।
प्रति नारायण सहित तिरेसठ, महापुरुष महिमाधारी।
पुरुष शलाका पंच पाप के, नाशक हों मंगलकारी।।4।।

जया आदि हैं अष्ट देवियाँ, सोलह विद्यादिक हैं देव।
श्रीयुत तीर्थंकर की माता-पिता, यक्ष-यक्षी भी एव।।
देवों के स्वामी बत्तिस वसु, दिक् कन्याएँ मनहारी।
दश दिक्पाल सहित विघ्नों के, नाशक हों मंगलकारी।।5।।

सुतप वृद्धि करके सर्वौषधि, ऋद्धी पाई पञ्च प्रकार।
वसु विधि महा निमित् के ज्ञाता, वसुविधि चारण ऋद्धीधार।।

पंच ज्ञान तिय बल भी पाये, बुद्धि सप्त ऋद्धीधारी।
ये सब गण नायक पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।6।।

आदिनाथ स्वामी अष्टापद, वासुपूज्य चंपापुर जी।
नेमिनाथ गिरनार गिरि से, महावीर पावापुर जी।।
बीस जिनेश सम्मेदशिखर से, मोक्ष विभव अतिशयकारी।
सिद्ध क्षेत्र पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।7।।

व्यंतर भवन विमान ज्योतिषी, मेरु कुलाचल इष्वाकार।
जंबू शाल्मलि चैत्य वृक्ष की, शाखा नंदीश्वर वक्षार।।
रूप्यादि कुण्डल मनुजोत्तर, में जिनगृह अतिशयकारी।
वे सब ही पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।8।।

तीर्थंकर जिन भगवंतों को, गर्भ जन्म के उत्सव में।
दीक्षा केवलज्ञान विभव अरु, मोक्ष प्रवेश महोत्सव में।।
कल्याणक को प्राप्त हुए तब, देव किए अतिशय भारी।
कल्याणक पांचों पापों के, नाशक हों मंगलकारी।।9।।

धन वैभव सौभाग्य प्रदायक, जिन मंगल अष्टक धारा।
सुप्रभात कल्याण महोत्सव, में सुनते-पढ़ते न्यारा।।
धर्म अर्थ अरु काम समन्वित, लक्ष्मी हो आश्रयकारी।
मोक्ष लक्ष्मी 'विशद' प्राप्त कर, होते हैं मंगलकारी।।10।।

।। इति मंगलाष्टकम् ।।

गुरु भक्ति

Y_©àÝmdH$ma_nyÁ`ho !, VdMaUm|_|H$ê±$Z_Z²Ÿ&
~w{Õ{dHmeHà~bAmmHmo, HaVoh_gmXadÝXZŸ&&
na_empÝVXoZodmboho !, Jwéda H$aVoh_AM©ZŸ&
{dÛX{gÝwJwUH$AmU©dH$mo, H$aVoh_eV²-eV²dÝXZŸ&&

अभिषेक पाठ भाषा

-आचार्य विशदसागरजी

(शम्भू छंद)

श्रीमत् जिनवर वन्दनीय हैं, तीन लोक में मंगलकार।
स्याद्वाद के नायक अनुपम, अनन्त चतुष्टय अतिशयकार।।
मूल संघ अनुसार विधि युत, श्री जिनेन्द्र की शुभ पूजन।
पुण्य प्रदायक सद्दृष्टि को, करने वाली कर्म शमन।।1।।

ॐ ह्रीं क्ष्वीं भू: स्वाहा स्नपन प्रस्तावनाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

श्रीमत् मेरू के दर्भाक्षत, युक्त नीर से धो आसन।
मोक्ष लक्ष्मी के नायक जिन, का शुभ करके स्थापन।।
मैं हूँ इन्द्र प्रतिज्ञा कर शुभ, धारण करके आभूषण।
यज्ञोपवीत मुद्रा कंकण अरु, माला मुकुट करूँ धारण।।2।।

ॐ ह्रीं नमो परमशान्ताय शांतिकराय पवित्रीकृतायाहं रत्नत्रय स्वरूपं यज्ञोपवीत धारयामि।

हे विबुधेश्वर ! वृन्दों द्वारा, वन्दनीय श्री जिन के बिम्ब।
चरण कमल का वन्दन करके, अभिषेकोत्सव कर प्रारम्भ।।
स्वयं सुगन्धी से आये ज्यों, भ्रमर समूहों का गुंजन।
गंध अनिन्द्य प्रवासित अनुपम, का मैं करता आरोपण।।3।।

ॐ ह्रीं परम पवित्राय नम: नवांगेषु चंदनानुलेपनं करोमि।

जो प्रभूत इस लोक में अनुपम, दर्प और बल युक्त सदैव।
बुद्धीशाली दिव्य कुलों में, जन्मे जो नागों के देव।।
मैं समक्ष उनके शुभ अनुपम, करने हेतु संरक्षण।
स्नपन भूमि का करता हूँ, अमृत जल से प्रच्छालन।।4।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमि शुद्धिं करोमि स्वाहा।

इन्द्र क्षीर सागर के निर्मल, जल प्रवाह वाला शुभ नीर।
हरता है संसार ताप को, काल अनादि जो गम्भीर।।

जिनवर के शुभ पाद पीठ का, प्रच्छालन करता कई बार।
हुआ उपस्थित उसी पीठ को, प्रच्छालित मैं करूँ सम्हार।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन पीठ-प्रक्षालनं करोमि स्वाहा।

श्री सम्पन्न शारदा के मुख, से निकले जो अतिशयकार।
विघ्नों का नाशक करता है, सदा सभी का मंगलकार।।
स्वयं आप शोभा से शोभित, वर्ण रहा पावन श्रीकार।
श्री जिनेन्द्र के भद्रपीठ पर, लिखता हूँ मैं अपरम्पार।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोमिं स्वाहा।

गिरि सुमेरु के अग्रभाग में, पाण्डुक शिला का है स्थान।
श्री आदि जिन का पहले ही, इन्द्र किए अभिषेक महान्।।
कल्याणक का इच्छुक मैं भी, जिन प्रतिमा का स्थापन।
अक्षत जल पुष्पों से पूजा, भाव सहित करता अर्चन।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीवर्णैं प्रतिमास्थापनं करोमि स्वाहा।

(चौकी पर चारों दिशा में चार कलश स्थापित करें।)

उत्तमोत्तम पल्लव से अर्चित, कहे गये जो महति महान्।
स्वर्ण और चाँदी ताँबे अरु, रांगा निर्मित कलश महान्।।
चार कलश चारों कोणों पर, जल पूरित ज्यों चउ सागर।
ऐसा मान करूँ स्थापन, भक्ति से मैं अभ्यन्तर।।8।।

ॐ ह्रीं स्वस्त्ये चतुः कोणेषु चतुः कलश स्थापनं करोमि स्वाहा।

(जल से अभिषेक करें)

श्री जिनेन्द्र के चरण दूर से, नम्र हुए इन्द्रों के भाल।
मुकुट मणी में लगे रत्न की, किरणच्छवि से धूसर लाल।।
जो प्रस्वेद ताप मल से हैं, मुक्त पूर्ण श्री जिन भगवान।
भक्ति सहित प्रकृष्ट नीर से, मैं करता अभिषेक महान्।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐ अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ह्वीं ह्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतरजलेन जिनाभिषेचयामि स्वाहा।

उदक चन्दन ..... महंयजे।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्तेभ्यो अभिषेकान्ते अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

(चार कलश से अभिषेक करें)

इष्ट मनोरथ रहे सैकड़ों, उनकी शोभा धारे जीव।
पूर्ण सुवर्ण कलशा लेकर शुभ, लाए अनुपम श्रेष्ठ अतीव।।
भव समुद्र के पार हेतु हैं, सेतु रूप त्रिभुवन स्वामी।
करता हूँ अभिषेक भाव से, श्री जिनेन्द्र का शिवगामी।।

ॐ ह्रीं श्रीमंतं भगवंतं कृपालसंतं वृषभादि वर्धमानांतंचतुर्विंशति तीर्थंकरपरमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे .... देशे ... नाम नगरे एतद् ... जिनचैत्यालये वीर नि. सं. ... मासोत्तममासे ... मासे ... पक्षे ... तिथौ ... वासरे प्रशस्त ग्रहलग्न होरायां मुनिआर्यिका-श्रावक-श्राविकाणाम् सकलकर्मक्षयार्थं जलेनाभिषेकं करोमि स्वाहा। इति जलस्नपनम्।

उदक चन्दन ..... महंयजे।

ॐ ह्रीं श्री अभिषेकान्ते वृषभादि वीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुगंधित कलशाभिषेक करें)

जिनके शुभ आमोद के द्वारा, अन्तराल भी भली प्रकार।
चतुर्दिशा का परम सुवासित, हो जाता है शुभ मनहार।।
चार प्रकार कर्पूर बहुल शुभ, मिश्रित द्रव्य सुगन्धीवान।
तीन लोक में पावन जिन का, करता मैं अभिषेक महान्।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं ह्वीं ह्वीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर पूर्णसुगंधितकलशाभिषेकेन जिनमभिषेचयामि स्वाहा।

उदक चन्दन ..... महंयजे।

ॐ ह्रीं श्री अभिषेकान्ते वृषभादि वीरान्तेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

इत्याशीर्वादः

अथ वृहद् शान्तिधारा

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री वीतरागाय नमः

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकलमषाय दिव्यतेजोमूर्तये नमः श्री शांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपापप्रणाशनाय सर्वविघ्नविनाशनाय सर्वरोगोपसर्गविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रव–विनाशनाय, सर्वक्षामडामरविनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः मम (...) **सर्वज्ञानावरण कर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वदर्शनावरण कर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्ववेदनीय कर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वमोहनीय कर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वायुःकर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वनामकर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वगोत्रकर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वान्तरायकर्म** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वक्रोधं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वमानं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वमायां** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वलोभं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वमोहं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वरागं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वद्वेषं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वगजभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वसिंहभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वाग्निभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वसर्पभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वयुद्धभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वसागरनदीजलभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वजलोदरभगंदरकुष्ठकामलादिभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वनिगडादिबंधनभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्ववायुयानदुर्घटनाभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्ववाष्पयानदुर्घटनाभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वचतुश्चक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वत्रिचक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वद्विचक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्ववाष्पधानीविस्फोटकभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वविषाक्तवाष्पक्षरणभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि

सर्वविद्युतदुर्घटनाभयं छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वभूकम्पदुर्घटनाभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वभूतपिशाचव्यंतर–डाकिनीशाकिन्यादिभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वधनहानिभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वव्यापारहानिभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वराजभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वचौरभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वदुष्टभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वशत्रुभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वशोकभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वसाम्प्रदायिकविद्वेषं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्ववैरं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वदुर्भिक्षं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वमनोव्याधिं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वआर्तरौद्रध्यानं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वदुर्भाग्यं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वायशः** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वपापं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्व अविद्यां** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वप्रत्यवायं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वकुमतिं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वक्रूरग्रहभयं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वदुःखं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि **सर्वापमृत्युं** छिन्धि छिन्धि भिन्धि भिन्धि।

ॐ त्रिभुवनशिखरशेखर–शिखामणि–त्रिभुवनगुरुत्रिभुवनजनता अभयदानदायकसार्वभौम–धर्मसाम्राज्यनायकमहति–महावीरसन्मति–वीरातिवीर वर्धमाननामालंकृत श्री महावीरजिनशासनप्रभावात् सर्वे जिनभक्ताः सुखिनो भवंतु। सुखिनो भवंतु। सुखिनो भवंतु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं आद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे मेरोर्दक्षिणे भागे भरतक्षेत्रे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे भारतदेशे.... प्रदेशे.... नामनगरे वीरसंवत्.... तमे.... मासे.... पक्षे... तिथौ... वासरे नित्य पूजावसरे (...... विधानावसरे) विधीयमाना इयं शान्तिधारा सर्वदेशे राज्ये राष्ट्रे पुरे ग्रामे नगरे सर्वमुनिआर्यिका–श्रावकश्राविकाणां चतुर्विधसंघस्थ मम च शांतिं करोतु मंगलं तनोतु इति स्वाहा।

हे षोडश तीर्थंकर ! पंचमचक्रवर्तिन् ! कामदेवरूप ! श्री शांतिजिनेश्वर ! **सुभिक्षं** कुरू कुरू **मनः समाधिं** कुरू कुरू **धर्मशुक्लध्यानं** कुरू कुरू

सुयशः कुरू कुरु **सौभाग्यं** कुरू कुरु **अभिमतं** कुरू कुरु **पुण्यं** कुरू कुरू **विद्यां** कुरू कुरू **आरोग्यं** कुरू कुरु **श्रेयः** कुरू कुरु **सौहार्दं** कुरू कुरु **सर्वारिष्ट ग्रहादीनं** अनुकूलय अनुकूलय **कदलीघातमरणं** घातय घातय **आयुर्**द्राघय द्राघय। **सौख्यं** साधय साधय, ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत् शांतिकराय सर्वोपद्रव–शांति कुरू कुरू ह्रीं नमः। परमपवित्रसुगंधितजलेन जिनप्रतिमायाः मस्तकस्योपरि शांतिधारां करोमीति स्वाहा। चतुर्विधसंघस्थ मम च सर्वशांतिं कुरू कुरू तुष्टिं कुरू कुरू पुष्टिं कुरू कुरू वषट् स्वाहा।

शांति शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां।
शांति निरन्तर तपोभव भावितानां।।
शांतिः कषाय जय जृम्भित वैभवानां।
शांतिः स्वभाव महिमान मुपागतानां।।

संपूजकानां प्रतिपालकानां यतीन्द्र सामान्य तपोधनानां।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञः करोतु शांतिं भगवान जिनेन्द्रः।।

अज्ञान महातम के कारण, हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतू, प्रभु शांति धारा देते हैं।।

(अर्घ)

शांतिधारा करके हे प्रभु, अर्घ्य चढ़ाते मंगलकार।
'विशद' शांति को पाने हेतू, वन्दन करते बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं त्रिभुवनपते शान्तिधारां करोमि नमोऽर्हते स्वाहा।

आचार्य 108 श्री विशदसागरजी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ हूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्यो: अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनाभिषेक समय की आरती

(तर्ज–सुरपति ले अपने...)

जिन प्रतिमा को धर शीश, चले नर ईश, सहित परिवारा।
जिन शीश पे देने धारा..... ।। टेक ।।
जिनवर अनन्त गुण धारी हैं, जो पूर्ण रूप अविकारी हैं।
जिनके चरणों में झुकता है जग सारा– जिन शीश... ।।1 ।।
जिनगृह सुर भवनों में सोहें, स्वर्गों में भी मन को मोहें।
शत इन्द्र वहाँ जाके बोलें जयकारा–जिन शीश... ।।2 ।।
गिरि तरुवर पर जिनगृह मानो, जिनबिम्ब श्रेष्ठ जिनमें मानो।
जो अकृत्रिम हैं ना निर्मित किसी के द्वारा–जिन शीश... ।।3 ।।
जिन शीश पे धारा करते हैं, वे अपने पातक हरते हैं।
जिन भक्ती बिन यह है संसार असारा–जिन शीश... ।।4 ।।
जिन शीश पे जो जल जाता है, वह गंधोदक बन जाता है।
जो रोगादिक से दिलवाए छुटकारा–जिन शीश... ।।5 ।।
गंधोदक शीश चढ़ाते हैं, वे निश्चय शुभ फल पाते हैं।
मैना सुन्दरि ने पति का कुष्ट निवारा–जिन शीश... ।।6 ।।
जिन मंदिर जो नर जाते हैं, वे विशद शांति सुख पाते हैं।
उनके जीवन का चमके 'विशद' सितारा –जिन शीश... ।।7 ।।
जो पावन दीप जलाते हैं, अरु भाव से आरति गाते हैं।
उन जीवों का इस भव से हो निस्तारा–जिन शीश... ।।8 ।।

आचार्योपाध्याय–सर्वसाधु का अर्घ्य

रत्नत्रय के धारी पावन, शिवपथ के राही अनगार।
विषयाशा के त्यागी साधू, तीन लोक में मंगलकार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करते हम जिनका अर्चन।
'विशद' भाव से चरण कमल में, भाव सहित करते वन्दन।।

ॐ ह्रीं निर्ग्रन्थाचार्य उपाध्याय सर्व साधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विनय पाठ

(दोहा)

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ।।
कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान् ।।
दुखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।
सुर-नर-किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान।।
अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज।।
समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश।।
निर्मल भावों से प्रभू, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश।।
भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार ।।
करके तव पद अर्चना, विघ्न रोग हों नाश।
जन-जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश।।
इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार।।
निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभू ! करते स्वयं समान।।
अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव ।
जब तक मम जीवन रहे, ध्याऊँ तुम्हें सदैव ।।

परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल।।
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ती धाम।
चौबीसों जिनराज को, करते 'विशद' प्रणाम।।

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।
हरें अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान।।1।।
मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध।।2।।
मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवज्झाय।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय।।3।।
मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म।।4।।
मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव।।5।।
इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धी सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार।।6।।
मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान।।7।।

अथ् अर्हत पूजा प्रतिज्ञायां... *।। पुष्पांजलि क्षिपामि ।।*

(यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना एवं पूजन की प्रतिज्ञा करनी चाहिए।)(जो शरीर पर वस्त्र एवं आभूषण हैं या जो भी परिग्रह है, इसके अलावा परिग्रह का त्याग एवं मंदिर से बाहर जाने का त्याग जब तक पूजन करेंगे तब तक के लिए करें।)

इत्याशीर्वाद :

पूजा पीठिका

(हिन्दी भाषा)

ॐ जय जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।।1।।

अरहन्तों को नमन् हमारा, सिद्धों को करते वन्दन।
आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्याय का है अर्चन।।
सर्वलोक के सर्व साधुओं, के चरणों शत्‌शत् वन्दन।
पञ्च परम परमेष्ठी के पद, मेरा बारम्बार नमन्।।

ॐ ह्रीं अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल चार-चार हैं उत्तम, चार शरण हैं जगत् प्रसिद्ध।
इनको प्राप्त करें जो जग में, वह बन जाते प्राणी सिद्ध।।
श्री अरहंत जगत् में मंगल, सिद्ध प्रभू जग में मंगल।
सर्व साधु जग में मंगल हैं, जिनवर कथित धर्म मंगल।।
श्री अरहंत लोक में उत्तम, परम सिद्ध होते उत्तम।
सर्व साधु उत्तम हैं जग में, जिनवर कथित धर्म उत्तम।।
अरहंतों की शरण को पाएँ, सिद्ध शरण में हम जाएँ।
सर्व साधु की शरण केवली, कथित धर्म शरणा पाएँ।।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चाल टप्पा)

अपवित्र या हो पवित्र कोई, सुस्थित दुस्थित होवे।
पंच नमस्कार ध्याने वाला, सर्व पाप को खोवे।।
अपवित्र या हो पवित्र नर, सर्व अवस्था पावें।
बाह्यभ्तंर से शुचि हैं वह, परमातम को ध्यावें।।
अपराजित यह मंत्र कहा है, सब विघ्नों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।

पञ्च नमस्कारक यह अनुपम, सब पापों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी।।
परं ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, अर्हं अक्षर माया।
बीजाक्षर है सिद्ध संघ का, जिसको शीश झुकाया।।
मोक्ष लक्ष्मी के मंदिर हैं, अष्ट कर्म के नाशी।
सम्यक्त्वादि गुण के धारी, सिद्ध नमूँ अविनाशी।।
विघ्न प्रलय हों और शाकिनी, भूत पिशाच भग जावें।
विष निर्विष हो जाते क्षण में, जिन स्तुति जो गावें।।

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।1।।

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।3।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरू ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्राणि तत्त्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान (हिन्दी)

(शम्भू छन्द)

तीन लोक के स्वामी विद्या, स्याद्वाद के नायक हैं।
अनन्त चतुष्टय श्री के धारी, अनेकान्त प्रगटायक हैं।।
मूल संघ में सम्यक् दृष्टी, पुरुषों के जो पुण्य निधान।
भाव सहित जिनवर की पूजा, विधि सहित करते गुणगान।।1।।

जिन पुंगव त्रैलोक्य गुरू के, लिए 'विशद' होवे कल्याण।
स्वाभाविक महिमा में तिष्ठे, जिनवर का हो मंगलगान।।
केवल दर्शन ज्ञान प्रकाशी, श्री जिन होवें क्षेम निधान।
उज्ज्वल सुन्दर वैभवधारी, मंगलकारी हों भगवान।।2।।

विमल उछलते बोधामृत के, धारी जिन पावें कल्याण।
जिन स्वभाव परभाव प्रकाशक, मंगलकारी हों भगवान।।
तीनों लोकों के ज्ञाता जिन, पावें अतिशय क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों में, विस्तृत ज्ञानी हैं भगवान।।3।।

परम भाव शुद्धी पाने का, अभिलाषी होकर मैं नाथ।
देश काल जल चन्दनादि की, शुद्धी भी रखकर के साथ।।
जिन स्तवन जिन बिम्ब का दर्शन, ध्यानादी का आलम्बन।
पाकर पूज्य अरहन्तादी की, करते हम पूजन अर्चन।।4।।

हे अर्हन्त ! पुराण पुरुष हे !, हे पुरुषोत्तम यह पावन।
सर्व जलादी द्रव्यों का शुभ, पाया हमने आलम्बन।।
अति दैदीप्यमान है निर्मल, केवल ज्ञान रूपी पावन।
अग्नी में एकाग्र चित्त हो, सर्व पुण्य का करें हवन।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ–प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(दोहा छन्द)

श्री ऋषभ मंगल करें, मंगल श्री अजितेश।
श्री संभव मंगल करें, अभिनंदन तीर्थेश।।
श्री सुमति मंगल करें, मंगल श्री पद्मेश।
श्री सुपार्श्व मंगल करें, चन्द्रप्रभु तीर्थेश।
श्री सुविधि मंगल करें, शीतलनाथ जिनेश।
श्री श्रेयांस मंगल करें, वासुपूज्य तीर्थेश।।
श्री विमल मंगल करें, मंगलानन्त जिनेश।
श्री धर्म मंगल करें, शांतिनाथ तीर्थेश।।
श्री कुन्थु मंगल करें, मंगल अरह जिनेश।
श्री मल्लि मंगल करें, मुनिसुव्रत तीर्थेश।।
श्री नमि मंगल करें, मंगल नेमि जिनेश।
श्री पार्श्व मंगल करें, महावीर तीर्थेश।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(छन्द ताटंक)

महत् अचल अद्भुत अविनाशी, केवल ज्ञानी संत महान्।
शुभ दैदीप्यमान मन: पर्यय, दिव्य अवधि ज्ञानी गुणवान।।
दिव्य अवधि शुभ ज्ञान के बल से, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।1।।

(यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पाञ्जलि क्षेपण करना चाहिये।)

जो कोष्ठस्थ श्रेष्ठ धान्योपम, एक बीज सम्भिन्न महान्।
शुभ संश्रोतृ पदानुसारिणी, चउ विधि बुद्धी ऋद्धीवान।।
शक्ती तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महा ऋद्धी धारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।2।।

श्रेष्ठ दिव्य मतिज्ञान के बल से, दूर से ही हो स्पर्शन।
श्रवण और आस्वादन अनुपम, गंध ग्रहण हो अवलोकन।।
पंचेन्द्रिय के विषय ग्राही, श्रेष्ठ महा ऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।3।।

प्रज्ञा श्रमण प्रत्येक बुद्ध शुभ, अभिन्न दशम पूरवधारी।
चौदह पूर्व प्रवाद ऋद्धि शुभ, अष्टांग निमित्त ऋद्धीधारी।।शक्ति...।।4।।

जंघा अग्नि शिखा श्रेणी फल, जल तन्तू हों पुष्प महान्।
बीज और अंकुर पर चलते, गगन गमन करते गुणवान।।शक्ति...।।5।।

अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, ऋद्धीधारी कुशल महान्।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारण करते जो गुणवान।।शक्ति...।।6।।

जो ईशत्व वशित्व प्राकम्पी, कामरूपिणी अन्तर्धान।
अप्रतिघाती और आप्ती, ऋद्धी पाते हैं गुणवान।।शक्ति... ।।7।।

दीप्त तप्त अरू महा उग्र तप, घोर पराक्रम ऋद्धी घोर।
अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धिधारी, करते मन को भाव विभोर।।शक्ति...।।8।।

आमर्ष अरू सर्वौषधि ऋद्धी, आशीर्विष दृष्टी विषवान।
क्ष्वेलौषधि जल्लौषधि ऋद्धी, विडौषधी मल्लौषधि जान।।शक्ति...।।9।।

क्षीर और घृतस्रावी ऋद्धी, मधु अमृतस्रावी गुणवान।
अक्षीण संवास अक्षीण महानस, ऋद्धीधारी श्रेष्ठ महान्।। शक्ति...10।।

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्) परि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

खुद से तू खुदा होगा, खुद की तू इबादत कर।
नतीजा भी भला होगा 'विशद', स्वयं की तू शिकायत कर।।
कि सूरत देखकर प्रभु की, नसीहत हमको मिलती है।
इबादत जो भी करते हैं, जिन्दगी उनकी खिलती है।।

श्री देव-शास्त्र-गुरु पूजा

(स्थापना)

देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभू निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह ! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, प्रभु मोह तिमिर विनसाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव-शास्त्र-गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव–शास्त्र–गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव–शास्त्र–गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– देव–शास्त्र–गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल।।

(तामरस छंद)

जय–जय–जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते।।
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्व साधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते।।
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पञ्चकल्याण नमस्ते।।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शास्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते।।

दोहा– अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– देव–शास्त्र–गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।
ऋद्धि–सिद्धि सौभाग्य पा, पाते शिव का योग।।

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्) ।।

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव–शास्त्र–गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण।।
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान।।
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान ! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छंद)

जल पिया अनादि से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उनसे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं।।

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ति हम पाए हैं।
अभिव्यक्ति नहीं कर पाए, अतः भवसागर में भटकाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मों कृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं।।
जिन तीर्थंकर नवदेव 'विशद', जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार।। शान्तये शांतिधारा..

दोहा- पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पञ्च कल्याणक के अर्घ

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करे जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व–पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक....सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, और ना मिलते अन्य कहीं।।
विंशति कोड़ा–कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल।।
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते हैं पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश।।
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है।।
आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।

प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश।।5।।
वस्तू तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख–दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याए भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा– नेता मुक्ति मार्ग के, तीन लोक के नाथ।
शिवपद पाने नाथ हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ..... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।
मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

श्री भरतेश्वर स्वामी की पूजा

(स्थापना)

प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ के, प्रथम पुत्र हैं भरत महान।
चक्रवर्ति पद पाया जिनने, अन्तर्मुहूर्त में केवलज्ञान।।
वसुधा काहू की ना हुई है, दिए जगत को यह संदेश।
'विशद' मोक्ष पद पाया जिनने, नाश किए जो कर्म अशेष।।

दोहा– शिव पद के राही बने, पाए पद निर्वाण।
भरत केवली का हृदय, करते हम आह्वान।।

ॐ ह्रीं प्रथम चक्रवर्ती मोक्षगामी श्री भरतेश्वर स्वामिन् ! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणं।

(ज्ञानोदय छन्द)

प्रासुक जल अर्पण करके, निज शुद्धी पाने आए हैं।
अशुभ भाव हे नाथ चरण में, आज मिटाने आए हैं।।
हे भरतेश ! आपने सारा, जग बतलाया है निस्सार।
मुक्ती पथ के राही तव पद, वन्दन मेरा बारम्बार।।1।।

ॐ ह्रीं प्रथम चक्रवर्ती मोक्षगामी श्री भरतेश्वर जिनेन्द्राय जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भूत भविष्यत के विकल्प में, अब तक जीते आए हैं।
भवाताप हो नाश प्रभू यह, गंध चढ़ाने लाए हैं।।
हे भरतेश ! आपने सारा, जग बतलाया है निस्सार।
मुक्ती पथ के राही तव पद, वन्दन मेरा बारम्बार।।2।।

ॐ ह्रीं प्रथम चक्रवर्ती मोक्षगामी श्री भरतेश्वर जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जगत उपाधी की चाहत में, अक्षय पद से दूर रहे।
मिथ्याभाव बनाकर हमने, कर्मों के घन घात सहे।।

हे भरतेश ! आपने सारा, जग बतलाया है निस्सार।
मुक्ती पथ के राही तव पद, वन्दन मेरा बारम्बार।।3।।

ॐ ह्रीं प्रथम चक्रवर्ती मोक्षगामी श्री भरतेश्वर जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय मन के विषयों की ही, अभिलाषा में भटकाए।
शील शिरोमणि ब्रह्मचर्य है, छोड़ विषय में सुख पाए।।
हे भरतेश ! आपने सारा, जग बतलाया है निस्सार।
मुक्ती पथ के राही तव पद, वन्दन मेरा बारम्बार।।4।।

ॐ ह्रीं प्रथम चक्रवर्ती मोक्षगामी श्री भरतेश्वर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

तन मन की चाहत में हमने, मिष्ट सरस आहार किया।
क्षुधा रोग ना शांत हुआ मम, विषय भाव को बढ़ा लिया।।
हे भरतेश ! आपने सारा, जग बतलाया है निस्सार।
मुक्ती पथ के राही तव पद, वन्दन मेरा बारम्बार।।5।।

ॐ ह्रीं प्रथम चक्रवर्ती मोक्षगामी श्री भरतेश्वर जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झिलमिल लड़ियों के प्रकाश में, बाहर का तम खो जाता।
मिथ्या मोह नाश ना हो तो, अन्तर तम ना मिट पाता।।
हे भरतेश ! आपने सारा, जग बतलाया है निस्सार।
मुक्ती पथ के राही तव पद, वन्दन मेरा बारम्बार।।6।।

ॐ ह्रीं प्रथम चक्रवर्ती मोक्षगामी श्री भरतेश्वर जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप दशांगी जला–जलाकर, नभ में धूम्र उड़ाया है।
भेद ज्ञान ना हृदय में जागा, कर्म का भार बढ़ाया है।।
हे भरतेश ! आपने सारा, जग बतलाया है निस्सार।
मुक्ती पथ के राही तव पद, वन्दन मेरा बारम्बार।।7।।

ॐ ह्रीं प्रथम चक्रवर्ती मोक्षगामी श्री भरतेश्वर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

मेरा-मेरा रटते-रटते, दुःख अनेकों पाए हैं।
फल पाने की इच्छा में हम, तीन लोक भटकाए हैं।।
हे भरतेश ! आपने सारा, जग बतलाया है निस्सार।
मुक्ती पथ के राही तव पद, वन्दन मेरा बारम्बार।।8।।

ॐ ह्रीं प्रथम चक्रवर्ती मोक्षगामी श्री भरतेश्वर जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पर द्रव्यों के भोग में हमने, जीवन कई गँवाए हैं।
पर पद की अभिलाषा करके, पद अनर्घ्य ना पाए हैं।।
हे भरतेश ! आपने सारा, जग बतलाया है निस्सार।
मुक्ती पथ के राही तव पद, वन्दन मेरा बारम्बार।।9।।

ॐ ह्रीं प्रथम चक्रवर्ती मोक्षगामी श्री भरतेश्वर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- **अष्ट कर्म को नाशकर, हुए आप निष्काम।**
शांतीधारा दे रहे, करके चरण प्रणाम।। ।। शान्तये शांतिधारा।।

दोहा- **तीन लोक में श्रेष्ठ हो, भवि जीवों के नाथ।**
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, चरण झुकाकर माथ।। ।। दिव्य पुष्पाञ्जलि क्षिपेत्।।

जयमाला

दोहा- चक्रवर्ति की सम्पदा, छोड़ी आप महान।
अन्तर्मुहूर्त में पा लिए, पावन केवलज्ञान।।

(शम्भू छन्द)

प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ जी, धर्म प्रवर्तक हुए महान।
नगर अयोध्या में जन्मे जो, अष्टापद से पद निर्वाण।।
प्रथम पुत्र जिनके भरतेश्वर, प्रथम चक्रवर्ती पद वान।
बने अयोध्या के शासक जो, जिनकी रही निराली शान।।
पुत्ररत्न अरु चक्ररत्न प्रभु, आदिनाथ प्रगटाए ज्ञान।
प्राप्त किए सन्देश तीन यह, एक साथ ही भरत महान।।

प्रभु के केवल ज्ञान की पूजा, किए प्रथम जाके भरतेश।
धर्मश्रेष्ठ है तीन लोक में, दिए जगत को यह संदेश।।
छह खण्डों पर राज्य चलाया, चौदह रत्नों के स्वामी।
नव निधियाँ शुभ पाने वाले, हुए मोक्ष के अनुगामी।।
चक्रवर्ति की सर्व सम्पदा, पाकर भी जो रहे विरक्त।
सहस छियानवे पाए रानियाँ, फिर भी नहीं हुए आसक्त।।
वृषभाचल पर्वत पर पहुँचे, नाम लिखाने जब भरतेश।
जगह कहीं खाली ना पाई, हुई विरक्ती तभी विशेष।।
भरत भूमि पर खड़ा हुआ मैं, बाहुबलि यह किए विकल्प।
वसुधा काहू की ना हुई यह, भरत कहे यह जीवन अल्प।।
यह संसार असार जानकर, संयम धारण किए विशेष।
अन्तर्मुहूर्त ध्यान करते ही, विशद ज्ञान पाए भरतेश।।
अष्टापद से कर्म नाशकर, सिद्ध शिला पर किए प्रयाण।
मोक्ष महाफल पाने हम भी, करते यहाँ 'विशद' गुणगान।।

दोहा- चक्री भरत के नाम से, भारत देश का नाम।
है प्रसिद्ध इस लोक में, पाए जो शिव धाम।।

ॐ ह्रीं प्रथम चक्रवर्ती मोक्षगामी श्री भरतेश्वर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व.स्वाहा।

दोहा- पूजा जो भरतेश की, करे भाव के साथ।
वैभवशाली वह बने, बने श्री का नाथ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री बाहुबली स्वामी का अर्घ्य

हमने जग के सब द्रव्यों को, पाकर के कीन्हा जन्म-मरण।
अब पद अनर्घ हेतु प्रभुवर, यह अर्घ्य श्रेष्ठ करते अर्पण।।
एक वर्ष का ध्यान लगाकर, निज स्वभाव में किया रमण।
बाहुबली के श्री चरणों में, मेरा बारम्बार नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री वासुपूज्य पूजा

(स्थापना)

हे वासुपूज्य ! तुम जगत् पूज्य, सर्वज्ञ देव करुणाधारी।
मंगल अरिष्ट शांतिदायक, महिमा महान् मंगलकारी।।
मेरे उर के सिंहासन पर, प्रभु आन पधारो त्रिपुरारी।
तुम चिदानंद आनंद कंद, करुणा निधान संकटहारी।।
जिन वासुपूज्य खानियाँ के, तुमको हम भक्त पुकार रहे।
दो हमको शुभ आशीष परम, मम् उर से करुणा स्रोत बहे।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र ! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

हम काल अनादी से जग में, कर्मों के नाथ सताए हैं।
तुम सम निर्मलता पाने को, प्रभु निर्मल जल भर लाए हैं।।
हम नाश करें मृतु जन्म जरा, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय के विषय भोग सारे, हमने भव-भव में पाए हैं।
हम स्वयं भोग हो गये मगर, न भोग पूर्ण कर पाए हैं।।
हम भव तापों का नाश करें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्मल अनंत अक्षय अखंड, अविनाशी पद प्रभु पाए हैं।
स्वाधीन सफल अविचल अनुपम, पद पाने अक्षत लाए हैं।।
अक्षय स्वरूप हो प्राप्त हमें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

जग में बलशाली प्रबल काम, उस काम को आप हराए हैं।
प्रमुदित मन विकसित पुष्प प्रभु, चरणों में लेकर आए हैं।।
हम काम शत्रु विध्वंस करें, हे जिनवर ! वासुपूज्य स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

इन्द्रिय विषयों की लालच से, चारों गति में भटकाए हैं।
यह क्षुधा रोग न मैट सके, अब क्षुधा मैटने आये हैं।।
नैवेद्य समर्पित करते हम, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन मोह महा मिथ्या कलंक, आदि सब दोष नशाए हैं।
त्रिभुवन दर्शायक ज्ञान विशद, प्रभु अविनाशी पद पाए हैं।।
मोहांधकार क्षय हो मेरा, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

है कर्म जगत् में महाबली, उसको भी आप हराए हैं।
गुप्ति आदि तप करके क्षय, कर्मों का करने आये हैं।।
हम धूप अनल में खेते हैं, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जग से अति भिन्न अलौकिक फल, निर्वाण महाफल पाये हैं।
हम आकुल व्याकुलता तजने, यह श्री फल लेकर आये हैं।।
हम मोक्ष महाफल पा जाएँ, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जग में सद् असद् द्रव्य जो हैं, उन सबके अर्घ बताए हैं।
अब पद अनर्घ की प्राप्ति हेतु, हम अर्घ बनाकर लाए हैं।।
हम पद अनर्घ को पा जाएँ, हे वासुपूज्य ! जिनवर स्वामी।
हमको प्रभु ऐसी शक्ती दो, बन जाएँ हम अन्तर्यामी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

छटवीं कृष्ण अषाढ़ की, हुआ गर्भ कल्याण।
सुर नर किन्नर भाव से, करते प्रभु गुणगान।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण षष्ठीयां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी, जन्मे श्री भगवान।
सुर नर वंदन कर रहे, वासुपूज्य पद आन।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी, तप धारे अभिराम।
सुर नर इन्द्र महेन्द्र सब, करते चरण प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

भादों कृष्ण द्वितिया तिथि, पाये केवलज्ञान।
समवशरण में पूजते, सुर नर ऋषि महान्।।4।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद कृष्ण द्वितीयायां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

भादों शुक्ला चतुर्दशी, प्रभु पाए निर्वाण।
पाँचों कल्याणक हुए, चंपापुर में आन।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री वासुपूज्य जिनाय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

जयमाला

दोहा– वासुपूज्य वसुपूज्य सुत, जयावती के लाल।
वसु द्रव्यों से पूजकर, करें विशद जयमाल।।

(छंद मोतियादाम)

प्रभु प्रगटाए दर्शन ज्ञान, अनंत सुखामृत वीर्य महान्।
प्रभु पद आये इन्द्र नरेन्द्र, प्रभु पद पूजें देव शतेन्द्र।।
प्रभु सब छोड़ दिए जग राग, जगा अंतर में भाव विराग।
लख्यो प्रभु लोकालोक स्वरूप, झुके कई आन प्रभु पद भूप।।1।।
तज्यो गज राज समाज सुराज, बने प्रभु संयम के सरताज।
अनित्य शरीर धरा धन धाम, तजे प्रभु मोह कषाय अरु काम।।
ये लोक कहा क्षणभंगुर देव, नशे क्षण में जल बुद–बुद एव।
अनेक प्रकार धरी यह देह, किए जग जीवन मांहि सनेह।।2।।

अपावन सात कुधातु समेत, ठगे बहु भांति सदा दुख देत।
करे तन से जिय राग सनेह, बंधे वसु कर्म जिये प्रति येह।।
धरें जब गुप्ति समिति सुधर्म, तबै हो संवर निर्जर कर्म।
किए जब कर्म कलंक विनाश, लहे तब सिद्ध शिला पर वास।।3।।
रहा अति दुर्लभ आतम ज्ञान, किए तिय काल नहीं गुणगान।
भ्रमे जग में हम बोध विहीन, रहे मिथ्यात्व कुतत्त्व प्रवीण।।
तज्यो जिन आगम संयम भाव, रहा निज में श्रद्धान अभाव।
सुदुर्लभ द्रव्य सुक्षेत्र सुकाल, सुभाव मिले नहिं तीनों काल।।4।।
जग्यो सब योग सुपुण्य विशाल, लियो तब मन में योग सम्हाल।
विचारत योग लौकांतिक आय, चरण पद पंकज पुष्प चढ़ाय।।
प्रभु तब धन्य किए सुविचार, प्रभु तप हेतु किए सुविहार।
तबै सौधर्म 'सु शिविका' लाय, चले शिविका चढ़ि आप जिनाय।।5।।
धरे तप केश सुलौंच कराय, प्रभु निज आतम ध्यान लगाय।
भयो तब केवल ज्ञान प्रकाश, किए तब सारे कर्म विनाश।।
दियो प्रभु भव्य जगत उपदेश, धरो फिर प्रभु ने योग विशेष।
तभी प्रभु मोक्ष महाफल पाय, हुए करुणानिधि नंत सुखाय।।6।।
रचें हम पूजा भाव विभोर, करें नित वंदन द्वयकर जोर।
मिले हमको शिवपुर की राह, 'विशद' जीवन में ये ही चाह।।
खानियाँ नसियाँ में भगवान, वासुपूज्य गाये महति महान।
करें हम जिनवर का गुणगान, प्राप्त हो हमको शिव सोपान।।7।।

(छंद घत्तानंद)

जय–जय जिनदेवं, हरिकृत सेवं, सुरकृत वंदित, शीलधरं।
भव भय हरतारं, शिव कर्त्तारं, शीलागारं नाथ परं।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– चम्पापुर में ही प्रभु, पाए पंच कल्याण।
गर्भ जन्म तप ज्ञान शुभ, पाए पद निर्वाण।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

चूलगिरि के अतिशयकारी 1008 श्री पार्श्वनाथ भगवान की पूजा

(स्थापना)

पार्श्व प्रभु की वन्दना, चूलगिरि पे जाय।
करे भाव से जो विशद, वह सुख शांती पाय।।
गुण पाने प्रभु आपके, करते हम गुणगान।
हृदय कमल में आज हम, करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं चूलगिरि स्थित श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ जिनेन्द्र ! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(तर्ज-माता तू दया करके....)

हम पूजा करने को, यह निर्मल जल लाए।
जन्मादिक रोगों से, हे प्रभु जी घबड़ाए।।
हम चूलगिरि जी के, श्री पार्श्व प्रभू ध्यायें।
त्रय भक्ती युक्त विशद, जिन चरणों सिरनाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं चूलगिरि स्थित श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु काल अनादी से, भव के संताप सहे।
परिजन से मोह किया, अपने वह सभी कहे।।
हम चूलगिरि जी के, श्री पार्श्व प्रभू ध्यायें।
त्रय भक्ती युक्त विशद, जिन चरणों सिरनाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं चूलगिरि स्थित श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने जो कुछ चाहा, यह सब नश्वर पाया।
जिस तन में रहते हैं, वह नश्वर है काया।।

हम चूलगिरि जी के, श्री पार्श्व प्रभू ध्यायें।
त्रय भक्ती युक्त विशद, जिन चरणों सिरनाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं चूलगिरि स्थित श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु काम रोग से हम, सदियों के सताए हैं।
तुम वैद्यनाथ अनुपम, तव शरण में आए हैं।।
हम चूलगिरि जी के, श्री पार्श्व प्रभू ध्यायें।
त्रय भक्ती युक्त विशद, जिन चरणों सिरनाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं चूलगिरि स्थित श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु क्षुधा व्याधि से हम, भव-भव भटकाए हैं।
औषधि तव भक्ती की, पाने को आए हैं।।
हम चूलगिरि जी के, श्री पार्श्व प्रभू ध्यायें।
त्रय भक्ती युक्त विशद, जिन चरणों सिरनाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं चूलगिरि स्थित श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मोह से मोहित हो, कई दुख हमने पाए।
अब ज्ञान का दीप जले, तव पद में हम आए।।
हम चूलगिरि जी के, श्री पार्श्व प्रभू ध्यायें।
त्रय भक्ती युक्त विशद, जिन चरणों सिरनाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं चूलगिरि स्थित श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की आँधी में, सारे गुण बिखर गये।
तव भक्ती करके विशद, कई पाए सूत्र नये।।
हम चूलगिरि जी के, श्री पार्श्व प्रभू ध्यायें।
त्रय भक्ती युक्त विशद, जिन चरणों सिरनाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं चूलगिरि स्थित श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सदियों से पाप किए, उनके ही फल पाए।
अब मुक्ती फल पाने, यह फल लेकर आए।।
हम चूलगिरि जी के, श्री पार्श्व प्रभू ध्यायें।
त्रय भक्ती युक्त विशद, जिन चरणों सिरनाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं चूलगिरि स्थित श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम कर्मों के फल से, इस जग में भटकाएँ।
अब मुक्ती पद पाने, यह अर्घ्य बना लाए।।
हम चूलगिरि जी के, श्री पार्श्व प्रभू ध्यायें।
त्रय भक्ती युक्त विशद, जिन चरणों सिरनाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं चूलगिरि स्थित श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– नीर लिया यह कूप से, प्रासुक हमने हाथ।
शांतीधारा दे रहे, तव चरणों हे नाथ !।।

शान्तये शान्तिधारा

दोहा– खुशबू से महके विशद, सारा यह आकाश।
पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने शिवपुर वास।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य *(दोहा)*

वैशाख कृष्ण द्वितिया प्रभू, पाए गर्भ कल्याण।
चय हो अच्युत स्वर्ग से, भूपर किए प्रयाण।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, जन्मे पारस नाथ।
सुर नरेन्द्र देवेन्द्र सब, चरण झुकाएँ माथ।।2।।

ॐ ह्रीं पौषवदी ग्यारस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, छोड़ दिया परिवार।
संयम धारण कर बने, पार्श्व प्रभू अनगार।।3।।

ॐ ह्रीं पौषवदी ग्यारस तपकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

चैत कृष्ण वदि चौथ को, पाए केवल ज्ञान।
समवशरण रचना किए, आके देव प्रधान।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदी चतुर्थी कैवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, करके आतम ध्यान।
कर्म नाश करके प्रभू, पाए पद निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं सावनसुदी सप्तमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– फणधर लक्षण आपका, ऊँचाई नौ हाथ।
जयमाला गाते यहाँ, चरणों में रख माथ।।

(त्रोटक छंद)

जय सम्यक् दर्शन ज्ञान धरे, तपधर कर्मों को क्षार करें।
जग जीवों को सुखदायक है, चूलगिरि पार्श्व जयदायक हैं।।1।।
गर्भादिक मंगल सार करें, जग जीवों के सब दुःख हरे।
तुम आनन्द वृद्ध विधायक है, चूलगिरि पार्श्व जयदायक है।।
तुम श्रीकर श्रीधर श्री हर हो, जय श्री भर श्री झर निर्भर हो।
तुम सिद्धि प्रसिद्धि बढ़ायक है, चूलगिरि पार्श्व जयदायक है।।
सब इष्ट अभीष्ट विशिष्ट कृता, उत्कृष्ट वरिष्ट गरिष्ट गता।
कृत कृत्य जगत त्रयनायक हैं, चूलगिरि पार्श्व जयदायक है।।

चिद्रूप स्वरूप अनुपम हो, तुम शुद्ध प्रबुद्ध सु उत्तम हो।
शिव मार्ग में आप सहायक है, चूलगिरि पार्श्व जयदायक है।।
निर्वाण अशर्ण सुशर्म तुम्हीं, दुःख हर्ण उधर्ण अकर्ण तुम्हीं।
जग जीवन के मनभायक हैं, चूलगिरि पार्श्व जयदायक है।।
अकलंक निशंक शुभंकर हो, निकलंक विशंक सुशंकर हो।
सब लोक अलोक के ज्ञायक हैं, चूलगिरि पार्श्व जयदायक है।।
वृष वृन्द अमन्द अनन्त गुणी, जयवन्त महन्त नमन्त मुनी।
चित् पिण्ड अखण्ड अकायक है, चूलगिरि पार्श्व जयदायक है।।
असुरेन्द्र सुरेन्द्र से पूज्य रहे, धरणेन्द्र नरेन्द्र सुभक्त कहे।
प्रभु जन्म जरादि नशायक है, चूलगिरि पार्श्व जयदायक है।।
निराभोग सुभोग वियोग हरें, निरयोग अरोग अशोक धरें।
अभयंकर शंकर क्षायक हैं, चूलगिरि पार्श्व जयदायक है।।

दोहा– 'विशद' आप गुण के धनी, त्रिभुवनपति जगदीश।
तव चरणों नत हो सभी, सुर नर खग के ईश।।

ॐ ह्रीं चूलगिरि स्थित श्री विघ्नहरण पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– चूलगिरि के पार्श्व जिन, लाए हम अरदास।
जागे मम सौभाग्य शुभ, पाएँ शिवपुर वास।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

यह आपका तीर्थ ही है यहाँ निशंक होकर आइये।
बसंत सा मौसम है खुश होकर मुस्कराइये।।
यदि जीवन को मधुवन बनाना चाहते हो विशद।
तो पार्श्व प्रभु की भक्ति के रंग में रंग जाइये।।

कलियाँ खिली हैं बाग में, इनको सँवरने दीजिए।
सीचों ना लेकिन इनको 'विशद' उजड़ने से बचा लीजिए।।

श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र चूलगिरि की पूजा

(स्थापना)

जयपुर शहर गुलाबी नगरी, के पूरब दिश में मनहार।
चूलगिरी पर्वत के ऊपर, निकट खानियाँ मंगलकार।।
पार्श्वनाथ खड्गासन सोहें, श्यामवर्ण के महति महान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते हैं प्रभु का आह्वान।।

दोहा– तीर्थ क्षेत्र की वन्दना, करते हैं जो जीव।
शिवपद के राही बनें, पाके पुण्य अतीव।।

ॐ ह्रीं चूलगिरि जिनालय स्थित समस्त जिनबिम्ब समूह ! अत्रावतरावतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

(अष्टक छन्द)

जल पीकर काल अनादी से, हम तृषा शांत न कर पाए।
जो लगा हुआ है मिथ्यामल, हम आज यहाँ धोने आए।।
श्री चूलगिरि जी तीर्थ क्षेत्र पर, श्री जिनेन्द्र को ध्याते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर हम, जिन पद में शीश झुकाते हैं।।1।।

ॐ ह्रीं चूलगिरि जिनालय स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिस डाले चन्दन के वन कई, पर शीतलता न पाई है।
सम्यक् श्रद्धा की विशद कली, न हमने हृदय खिलाई है।।
श्री चूलगिरि जी तीर्थ क्षेत्र पर, श्री जिनेन्द्र को ध्याते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर हम, जिन पद में शीश झुकाते हैं।।2।।

ॐ ह्रीं चूलगिरि जिनालय स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

धोकर कई थाल तन्दुलों के, हम चढ़ा-चढ़ाकर हारे हैं।
अक्षय पद पाने हेतु नाथ !, अब आए चरण सहारे हैं।।
श्री चूलगिरि जी तीर्थ क्षेत्र पर, श्री जिनेन्द्र को ध्याते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर हम, जिन पद में शीश झुकाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं चूलगिरि जिनालय स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

खाई तृष्णा की है असीम, हम उसे नहीं भर पाए हैं।
अटके हैं काम वासना में, छुटकारा पाने आये हैं।।
श्री चूलगिरि जी तीर्थ क्षेत्र पर, श्री जिनेन्द्र को ध्याते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर हम, जिन पद में शीश झुकाते हैं।।4।।

ॐ ह्रीं चूलगिरि जिनालय स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पम् निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों को क्षुधा वेदना ने, सदियों से सदा सताया है।
मनमाने व्यंजन खाकर भी, यह तृप्त नहीं हो पाया है।।
श्री चूलगिरि जी तीर्थ क्षेत्र पर, श्री जिनेन्द्र को ध्याते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर हम, जिन पद में शीश झुकाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं चूलगिरि जिनालय स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है घोर तिमिर मिथ्यातम का, उसमें प्राणी भटकाए हैं।
अब मोह तिमिर हो नाश पूर्ण, यह दीप जलाकर लाए हैं।।
श्री चूलगिरि जी तीर्थ क्षेत्र पर, श्री जिनेन्द्र को ध्याते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर हम, जिन पद में शीश झुकाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं चूलगिरि जिनालय स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो महामोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

हमने कर्मों से रिश्ता कर, पग-पग पर दुख ही दुख पाये।
अब पिण्ड छुड़ाने कर्मों से, यह धूप जलाने को लाए।।
श्री चूलगिरि जी तीर्थ क्षेत्र पर, श्री जिनेन्द्र को ध्याते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर हम, जिन पद में शीश झुकाते हैं।।7।।

ॐ ह्रीं चूलगिरि जिनालय स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल पापों का है चतुर्गती, जिसमें सब जीव भ्रमण करते।
अब मोक्ष महाफल पाने को, यह ताजे फल चरणों धरते।।
श्री चूलगिरि जी तीर्थ क्षेत्र पर, श्री जिनेन्द्र को ध्याते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर हम, जिन पद में शीश झुकाते हैं।।8।।

ॐ ह्रीं चूलगिरि जिनालय स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो मोक्षफलप्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम मोह से मोहित हुए विशद, सम्यक् पथ को ना पाये हैं।
अब मोक्ष मार्ग अपनाने को, यह अर्घ्य चढ़ाने लाए हैं।।
श्री चूलगिरि जी तीर्थ क्षेत्र पर, श्री जिनेन्द्र को ध्याते हैं।
अष्ट द्रव्य से पूजा कर हम, जिन पद में शीश झुकाते हैं।।9।।

ॐ ह्रीं चूलगिरि जिनालय स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- श्रेष्ठ सुगन्धित नीर से, देते हैं जलधार।
जीवन सुखमय शांत हो, मिले मोक्ष का द्वार।।

शान्तये शान्तिधारा

दोहा- पुष्पांजलि करने यहाँ, पुष्प लिए शुभ हाथ।
जिन गुण पाने के लिए, झुका चरण में माथ।।

दिव्य पुष्पांजलि क्षिपेत्

जयमाला

दोहा- पार्श्वनाथ तीर्थेश के, चरणों नमन त्रिकाल।
चूलगिरि जी तीर्थ की, गाते हैं जयमाल।।

(चौपाई)

राजस्थान प्रान्त शुभकारी, जयपुर शहर रहा मनहारी।
कहा गुलाबी नगरी भाई, जिसकी फैली जग प्रभुताई।।

देशभूषणाचार्य कहाए, कर विहार जयपुर में आए।
सन् उन्नीस सौ त्रेपन जानो, चूलगिरि पर्वत पे मानो।।
पार्श्वनाथ भगवान की भाई, जन्मकल्याण तिथि शुभ गाई।
पार्श्व प्रभू की मूर्ति प्यारी, हुई स्थापित अतिशयकारी।।
महावीर नेमीश्वर स्वामी, चौबीसों जिनवर शिवगामी।
पद्मासन में अनुपम सोहें, खड्गासन में मन को मोहे।।
वीर प्रभू खड्गासन भाई, शोभा पावें अतिसुखदायी।
आदिनाथ महिमा के धारी, भरत बाहुबली जी मनहारी।।
रत्नमयी पारस प्रभु गाए, अन्य कई जिनबिम्ब बताए।
विजय यन्त्र की शोभा भारी, नवग्रह यन्त्र रहे अघहारी।।
चूलगिरि पर जो जिन गाए, जिन के पद हम अर्घ्य चढ़ाए।
दूर-दूर से श्रावक आते, दर्शन कर सौभाग्य जगाते।।
ध्यान केन्द्र में ध्यान लगाते, श्रावक मन में शांती पाते।
श्रावक जिन का न्हवन कराते, मन में अतिशय मोद मनाते।।
भक्ति भाव से पूजा गाते, श्रावक कई विधान रचाते।
गाते हैं जो भजनावलियाँ, खिल जाती हैं मन की कलियाँ।।
हम भी जिनवर के गुण गाते, भक्ति भाव से शीश झुकाते।
अब हम रत्नत्रय को पाएँ, शिवपथ के राही बन जाएँ।।
जिनपूजा अक्षय सुखकारी, तीन लोक में मंगलकारी।
'विशद' मोक्ष जब तक ना पाएँ, श्री जिनवर की महिमा गाएँ।।

दोहा- चूलगिरि जी तीर्थ की, पूजा करके जीव।
'विशद' भाव निर्मल करें, पावें पुण्य अतीव।।

ॐ ह्रीं चूलगिरि जिनालय स्थित समस्त जिनबिम्बेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- तीर्थ वन्दना कर मिले, मन में शांति अपार।
विशद भाव से वन्दना, करते बारम्बार।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

नोट – प्रत्येक वेदी में मूर्ति के आगे काव्य मंत्र बोलकर अर्घ्य चढ़ाएँ।

चौबीस तीर्थंकर प्रतिमाओं की अर्घावली

प्रथम कोष्ठ (अर्घावली)

दोहा- तीर्थंकर चौबिस हुए, जग में महति महान्।
पुष्पाञ्जलि करके यहाँ, करते हम गुणगान।।

मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(मोतियादाम छन्द)

जिनेश्वर आदिनाथ भगवान, जगाए पावन केवल ज्ञान।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए अजितनाथ जिनराज, कर्म का जीते सकल समाज।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू सम्भव जिन की जयकार, बोलते सुर-नर बारम्बार।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सम्भवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू अभिनन्दन हुए महान, करें जिनका सब ही यशगान।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमति जिनवर हैं शुभ मतिमान, करें हम जिनवर का शुभ ध्यान।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मप्रभ गाए पद्म समान, पूजते जिनपद सब विद्वान।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुपारस जिन हैं मंगलकार, नहीं महिमा का जिनकी पार।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सुपारसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रप्रभु शीतल चन्द्र समान, करें हम जिनवर का गुणगान।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुविधि जिनवर विधि के अनुसार, मोक्ष पद पाए अपरम्पार।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सुविधिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभू हैं शीतल शीतलनाथ, झुकाते जिनपद में सुर माथ।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।10।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नशाए कर्म श्री श्रेयांश, पूजते जिन को सुर अधिकांश।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।11।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूज्य हैं वासुपूज्य भगवान, रहे जो विशद गुणों की खान।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।12।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विमल गुणधारी विमल जिनेश, पूज्य जग में जो हुए विशेष।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।13।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर गाए श्री अनन्त, पूजते जिनपद सुर नर संत।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।14।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बहाए धर्म की जो शुभ धार, धर्म जिन पाए भव से पार।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।15।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांति जिन देते शांति अपार, पूजते जिनके शुभ चरणार।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।16।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुन्थु जिनवर है महति महान, करें जो जग जीवों का कल्याण।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।17।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अरह जिनवर है महिमावान, पूजते मिलता शिव सोपान।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।18।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मल्लि जिन हैं मल्लों के नाथ, झुकाएँ मोह मल्ल पद माथ।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।19।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मुनिसुव्रत शुभ व्रत धार, किए हैं वसु कर्मों का क्षार।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।20।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कहाए श्री जिनवर नमिनाथ, जोड़ते जिनपद में हम हाथ।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।21।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेमि जिन होकर के स्वाधीन, हुए जो निज स्वभाव में लीन।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।22।।

ॐ ह्रीं श्री नेमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पार्श्वमणि सम जिन पारसनाथ, करे जो अर्चा बने सनाथ।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।23।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वीर जिन हैं वीरों में वीर, मैटते जग जीवों की पीर।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।24।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुए हैं तीर्थंकर चौबीस, चरण में झुका रहे हम शीश।
चढ़ाते जिनपद पावन अर्घ्य, प्राप्त हो हमको सुपद अनर्घ्य।।25।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खड़गासन प्रतिमाओं के अर्घ

द्वितिय कोष्ठ (अर्घ्यावली)

दोहा– तीर्थंकर चौबिस हैं, महिमामयी महान।
खड्गासन में शोभते, करते हम गुणगान।।

इति मण्डलस्योपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

(चौपाई)

आदिनाथ सृष्टी के कर्त्ता, मुक्ति वधू के हुए जो भर्त्ता।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।1।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अजितनाथ ने कर्म नशाए, फिर तीर्थंकर पदवी पाए।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्भव जिनवर हुए निराले, शिवपथ श्रेष्ठ दिखाने वाले।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।3।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अभिनन्दन पद वन्दन करते, कर्म कालिमा प्राणी हरते।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनंदननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुमतिनाथ जी साथ निभाते, जीवों को शिवपुर पहुँचाते।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पद्मप्रभु जी शिवपद दाता, जग जीवों के भाग्य विधाता।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन सुपार्श्वजी मंगलकारी, भवि जीवों के करुणाकारी।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

लक्षण–पग में चाँद का पाए, चन्द्रप्रभु जी जो कहलाए।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।8।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुविधिनाथ जी सुविधि बताएँ, मुक्ती प्राणी कैसे पाएँ।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल जिन शीतल गुणधारी, शिव पाये बनके अनगारी।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।10।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन श्रेयांस के हम गुण गाते, चरणों में शुभ अर्घ्य चढ़ाते।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।11।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वासुपूज्य जगपूज्य कहाए, चम्पापुर से मुक्ती पाए।
जिनकी महिमा यह जग गाए, पद में सादर शीश झुकाए।।12।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चाल छंद)

श्री विमलनाथ जिन स्वामी, हो गये प्रभु अन्तर्यामी।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते।।13।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं गुणानन्त के धारी, जिनवर अनन्त अविकारी।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते।।14।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु धर्म ध्वजा फहराए, जिन धर्मनाथ कहलाए।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते।।15।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन शांतिनाथ सुखदाता, हैं जग जीवों के त्राता।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते।।16।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं तीन पदों के धारी, श्री कुन्थू जिन शिवकारी।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते।।17।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु अरहनाथ को जानो, शिवपथ के दाता मानो।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते।।18।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हैं कर्म मल्ल के नाशी, प्रभु मल्लिनाथ शिव वासी।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते।।19।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु मुनिसुव्रत व्रतधारी, इस जग में मंगलकारी।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते।।20।।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो नमीनाथ को ध्याते, वह शिवपुर धाम बनाते।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते।।21।।

ॐ ह्रीं श्री नमीनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीवों पर दया विचारे, नेमी जिन दीक्षा धारे।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते।।22।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उपसर्ग सहे जो भारी, प्रभु पार्श्व बने शिवकारी।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते।।23।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन वीर वीरता पाए, शिवपुर में धाम बनाए।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते।।24।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर चौबिस गाये, जो शिव पदवी को पाए।
हम जिन का ध्यान लगाते, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते।।25।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतिय कोष्ठ (अर्घ्यावली)

गुफा स्थित श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली जी का अर्घ

(तर्ज- नन्दीश्वर जिनधाम.....)

पर द्रव्यों की ही आस, विशद लगाई है।
आतम के हित की बात, नहीं सुहाई है।।
हे आदिनाथ भरतेश, बाहुबली स्वामी।
दो शाश्वत सुख हे नाथ, तुम हो शिवगामी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि गुफा स्थित श्री आदिनाथ-भरत-बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

खड्गासन श्री महावीर भगवान का अर्घ

(शम्भू छन्द)

हम राग-द्वेष में अटक रहे, ईर्ष्या भी हमें जलाती है।
जग में सदियों से भटक रहे, पर शांति नहीं मिल पाती है।।
हम अर्घ बनाकर लाए हैं, मन का संताप विनाश करो।
हे चूलगिरि के वीर प्रभु, अब मेरा भी उद्धार करो।।2।।

ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि स्थित श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीस चरण पादुकाओं का अर्घ

(वीर छन्द)

कर्मों का घोर तिमिर छाया, मिथ्यात्व जाल फैलाए है।
हम भूल गये सद्राह प्रभो !, न पार उसे कर पाए हैं।।
हम पद अनर्घ्य पाने हेतू, यह अर्घ्य करें पद में अर्पण।
चौबिस तीर्थंकर के चरण कमल में, मेरा बारम्बार नमन।।3।।

ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि स्थित चौबीस जिनवर चरण कमलेभ्यो जल फलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रत्नमयी प्रतिमाओं का अर्घ

(शम्भू छन्द)

जल गंध आदि में पुष्प चरु, अक्षत फल श्रेष्ठ मिलाए हैं।
यह अर्घ्य चढ़ाकर नाथ !, आज, रत्नत्रय पाने आए हैं।।
हे चूलगिरि के पार्श्व प्रभु, हम तुम्हें मनाने आए हैं।
शुभ रत्नमयी प्रतिमाओं को, हम सादर शीश झुकाए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि स्थित श्री पार्श्वनाथ सहित सर्व रत्नमयी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विजय यंत्र जी का अर्घ

(तर्ज– नन्दीश्वर जिनधाम.....)

चमत्कार दिखलाने वाला, यंत्रराज शुभकार है।
ऋद्धी सिद्धि प्रदायक पावन, अतिशय मंगलकार है।।
जिसकी अर्चा करने हेतू, पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।
सुख–शांती सौभाग्य जगाएँ, 'विशद' भावना भाते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि स्थित अतिशयकारी विजय यंत्र समक्ष जल फलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नवग्रह यंत्र जी का अर्घ (गीता छन्द)

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, अरु दीप धूप फल ले आए।
वसु द्रव्य मिलाकर इसीलिए, यह अर्घ्य चढ़ाने हम लाए।।
नवग्रह की शांति हेतू यहाँ, नव कोटि से गुण गाते हैं।
हम विशद शांति पाए अनुपम, यह पावन अर्घ्य चढ़ाते हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री चूलगिरि स्थित सर्व आधि–व्याधि रोग विनाशन समर्थाय नवग्रह अरिष्ट निवारक नवग्रह यंत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी पूजाओं का समुच्चय अर्घ

अष्टम वसुधा पाने को यह, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
अष्ट गुणों की सिद्धी पाने, तव चरणों में आए हैं।।

णमोकार नंदीश्वर मेरु, सोलहकारण जिन तीर्थेश।
सहस्रनाम दशधर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव शास्त्र गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमाकृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक 1008 श्री..सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव–शास्त्र–गुरु, सोलहकारण–रत्नत्रय–दशधर्म–पंचमेरु–नन्दीश्वर त्रिलोक सम्बन्धी समस्त कृत्रिम–अकृत्रिम चैत्य–चैत्यालय, सिद्धक्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, त्रिकाल चौबीसी, विद्यमान बीस तीर्थंकर, तीन कम नौ करोड़, गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

चारित्र चक्रवर्ती प.पू. आचार्य श्री 108 शांतिसागरजी महाराज का अर्घ

(शम्भू छन्द)

पद अनर्घ्य की प्राप्ति हेतु यह, अर्घ्य बनाकर लाये हैं।
गुरुवर दो सामर्थ्य हमें हम, चरण शरण में आये हैं।।
शांति सिन्धु दो शांति हमें, हम शांती पाने आये हैं।
'विशद' भाव से पद पंकज में, अपना शीश झुकाये हैं।।8।।

ॐ ह्रूँ चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री 108 शांतिसागर यतिवरेभ्यो अर्घ्यं निर्व.स्वाहा।

चूलगिरि के प्रेरणास्रोत आचार्य श्री 108 देशभूषणजी महाराज का अर्घ

(शम्भू छन्द)

महायशस्वी परम तपस्वी, देशभूषण है जिनका नाम।
निर्माता गुरु चूलगिरि के, जिनके चरणों विशद प्रणाम।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करते चरणों में अर्चन।
मन–वच–तन से चरण कमल में, भाव सहित करते वन्दन।।9।।

ॐ ह्रूँ पंचाचार परायण छत्तीस मूलगुण परिचायक चूलगिरि के प्रेरणास्रोत आचार्य श्री 108 देशभूषण मुनिन्द्राय जल फलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प.पू. आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज का अर्घ

(शम्भू छन्द)

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर, थाल सजाकर लाए हैं।
महाव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं।।

विशद सिन्धु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ्य हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।।10।।

ॐ हूँ क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागर मुनिन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य-उपाध्याय-साधु परमेष्ठी का अर्घ (शम्भू छन्द)

रत्नत्रय के धारी पावन, शिवपथ के राही अनगार।
विषयाशा के त्यागी साधू, तीन लोक में मंगलकार।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, करते हम जिनका अर्चन।
विशद भाव से चरण कमल में, भाव सहित करते वन्दन।।11।।

ॐ हूँ निर्ग्रन्थाचार्य उपाध्याय सर्व साधुभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनशासन रक्षक यक्ष-यक्षणी का अर्घ (शम्भू छन्द)

वसु द्रव्य मिलाकर लाए, यह अर्घ्य भेंटने आए।
हे यक्ष-यक्षणी आओ, सम्मान यहाँ पर पाओ।।
जो जिनशासन के भाई, रक्षक गाए अतिशायी।
श्री जिनमहिमा जो गाते, जिनपद में शीश झुकाते।।12।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं चूलगिरि स्थित जिनशासन रक्षक यक्ष-यक्षणी इदं अष्ट द्रव्य गृहाण-गृहाण अष्ट द्रव्यं समर्पयामि नमः।

श्री पार्श्वनाथ शासन देवता धरणेन्द्र जी का अर्घ (बेसरी छन्द)

द्रव्य ये आठों रहे निराले, पद अनर्घ्य शुभ देने वाले।
धरणेन्द्र जिनभक्ति को आओ, प्रमुदित होके हर्ष मनाओ।।13।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री धवलवर्ण सर्वलक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्न धरणेन्द्र यक्ष परिवार सहिताय अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

पद्मावती देवी का अर्घ (शम्भू छन्द)

वसु विध द्रव्यादिक ले लाए, अष्ट महानिधि पाने आए।
करते विनय आपकी माता, विघ्न विनाशक दो अब साता।।
भक्त यहाँ पर तुमको ध्याते, अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाते।
चोलादिक जो यहाँ चढ़ाते, इच्छित फल वे प्राणी पाते।।14।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी अर्घ्य समर्पयामि।

समुच्चय जयमाला

दोहा– **पद तीर्थंकर का प्रभू, पाए मंगलकार।**
जयमाला गाते यहाँ, पाने भव से पार।।

(चौपाई)

आदिनाथ आदी में आए, अजितनाथ सब कर्म नशाए।
सम्भवनाथ कहे जग नामी, अभिनन्दन हैं शिव पथगामी।।
सुमतिनाथ शुभ मति के धारी, पद्म प्रभु जग मंगलकारी।
जिन सुपार्श्व महिमा दिखलाए, चन्द्र प्रभु चन्दा सम गाए।।
सुविधिनाथ है जग उपकारी, शीतल जिन शीतलता धारी।
जिन श्रेयांस जी श्रेय जगाए, वासुपूज्य जग पूज्य कहाए।।
विमलनाथ कर्मों के जेता, जिनानन्त हैं कर्म विजेता।
धर्मनाथ हैं धर्म के धारी, शांतिनाथ जग शांतीकारी।।
कुन्थुनाथ के गुण जग गाये, अरहनाथ पद शीश झुकाए।
मल्लिनाथ सब कर्म हटाए, मुनिसुव्रत पावन व्रत पाए।।
नमीनाथ पद नमन हमारा, नेमिनाथ दो हमें सहारा।
पार्श्वनाथ उपसर्ग विजेता, ढोक वीर पद में जग देता।।
चौबिस जिन महिमा के धारी, कहे स्वयंभू जिन अविकारी।
जो इनके पद पूज रचाये, पुण्य निधी वह प्राणी पाए।।
जिन की महिमा यह जग गाये, अर्चाकर सौभाग्य जगाए।
भाग्य उदय मेरा अब आया, नाथ आपका दर्शन पाया।।
द्वार आपका अतिशयकारी, श्रावक सुधि आते अनगारी।
भक्ति भाव से महिमा गाते, पद में सविनय शीश झुकाते।।
गाते हैं जो भजनावलियाँ, खिलती हैं भक्ती की कलियाँ।
भाव बनाकर हम यह आये, शिवपद हमको भी मिल जाए।।

दोहा– **शिव पद के धारी हुए, तीर्थंकर चौबीस।**
जिनके चरणों में विशद, झुका रहे हम शीश।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **पूजा करते आपकी, तीन लोक के नाथ।**
राह दिखाओ मोक्ष की, चरण झुकाते माथ।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

समुच्चय महा–अर्घ्य

पूज रहे अरहंत देव को, और पूजते सिद्ध महान्।
आचार्योपाध्याय पूज्य लोक में, पूज्य रहे साधू गुणवान।।
कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालय, चैत्य पूजते मंगलकार।
सहस्रनाम कल्याणक आगम, दश विध धर्म रहा शुभकार।।
सोलहकारण भव्य भावना, अतिशय तीर्थक्षेत्र निर्वाण।
बीस विदेह के तीर्थंकर जिन, 'विशद' पूज्य चौबिस भगवान।।
ऊर्जयन्त चम्पा पावापुर, श्री सम्मेद शिखर कैलाश।
पञ्चमेरु नन्दीश्वर पूजें, रत्नत्रय में करने वास।।
मोक्षशास्त्र को पूज रहे हम, बीस विदेहों के जिनराज।
महा अर्घ्य यह नाथ ! आपके, चरण चढ़ाने लाए आज।।

दोहा– जल गंधाक्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल साथ।
सर्व पूज्य पद पूजते, चरण झुकाकर माथ।।

ॐ ह्रीं श्री भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करे करावे भावना भावे श्री अरहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः प्रथमानुयोग–करणानुयोग–चरणानुयोग–द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः। दर्शन–विशुद्धयादिषोडशकारणेभ्यो नमः। उत्तम क्षमादि दशलक्षण धर्मेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन–सम्यग्ज्ञान–सम्यक्चारित्रेभयो नमः। जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै, नगर–नगरी विषै, ऊर्ध्व लोक मध्य लोक पाताल लोक विषै विराजमान कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्यालय जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्रे विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो नमः। पाँच भरत, पाँच ऐरावत, दश क्षेत्र संबंधी तीस चौबीसी के सात सौ बीस जिनबिम्बेभ्यो नमः। नंदीश्वर द्वीप संबंधी बावन जिनचैत्यालयेभ्यो नमः। पंचमेरु संबंधी अस्सी जिन चैत्यालयेभ्यो नमः। सम्मेदशिखर, कैलाश, चंपापुर, पावापुर, गिरनार, सोनागिर, राजगृही, मथुरा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री, मूढ़बद्री, हस्तिनापुर, चंदेरी, पपोरा, अयोध्या, शत्रुञ्जय, तारङ्गा, चमत्कारजी, महावीरजी, पद्मपुरी, तिजारा, विराटनगर, खजुराहो, श्रेयांशगिरि, मक्सी पार्श्वनाथ, चंवलेश्वर, चूलगिरि आदि अतिशय क्षेत्रेभ्यो नमः, श्री चारण ऋद्धिधारी सप्तपरमर्षिभ्यो नमः।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं श्री वृषभादि महावीर पर्यंत चतुर्विंशतितीर्थंकर परमदेवं आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य खंडे .... देश.... प्रान्ते.... नाम्नि नगरे.... मासानामुत्तमे .... मासे शुभ पक्षे .... तिथौ .... वासरे .... मुनि आर्यिकानां श्रावक–श्राविकानां सकल कर्मक्षयार्थं अनर्घ पद प्राप्तये संपूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिपाठ भाषा

(शम्भू छंद)

चन्द्र समान सुमुख है जिनका, शील सुगुण संयम धारी।
लज्जित करते नयन कमल दल, सहस्राष्ट लक्षण धारी।।
द्वादश मदन चक्री हो पंचम, सोलहवें तीर्थंकर आप।
इन्द्र नरेन्द्रादी से पूजित, जग का हरो सकल संताप।।
सुरतरु छत्र चँवर भामण्डल, पुष्प वृष्टि हो मंगलकार।
दिव्य ध्वनि सिंहासन दुन्दुभि, प्रातिहार्य ये अष्ट प्रकार।।
शांतिदायक हे शांती जिन !, श्री अरहंत सिद्ध भगवान।
संघ चतुर्विध पढ़ें सुनें जो, सबको कर दो शांति प्रदान।।
इन्द्रादी कुण्डल किरीटधर, चरण कमल में पूजें आन।
श्रेष्ठ वंश के धारी हे जिन !, हमको शांती करो प्रदान।।
संपूजक प्रतिपालक यतिवर, राजा प्रजा राष्ट्र शुभ देश।
'विशद' शांति दो सबको हे जिन !, यही हमारा है उद्देश्य।।
होय सुखी नरनाथ धर्मधर, व्याधी न हो रहे सुकाल।
जिन वृष धारे देश सौख्यकर, चौर्य मरी न हो दुष्काल।।

(चाल छन्द)

जिनघाती कर्म नशाए, कैवल्य ज्ञान प्रगटाए।
हे वृषभादिक जिन स्वामी, तुम शांती दो जगनामी।।

हो शास्त्र पठन शुभकारी, सत्संगति हो मनहारी।
सब दोष ढ़ाँकते जाएँ, गुण सदाचार के गाएँ।।
हम वचन सुहित के बोलें, निज आत्म सरस रस घोलें।
जब तक हम मोक्ष न जाएँ, तब तक चरणों में आएँ।।
तब पद मम हिय वश जावें, मम हिय तव चरण समावें।
हम लीन चरण हो जाएँ, जब तक मुक्ती न पाएँ।।

दोहा- वर्ण अर्थ पद मात्र में, हुई हो कोई भूल।
क्षमा करो हे नाथ सब, भव दुख हों निर्मूल।।
चरण शरण पाएँ 'विशद', हे जग बन्धु जिनेश।
मरण समाधी कर्म क्षय, पाएँ बोधि विशेष।।

(कायोत्सर्ग करें)

विसर्जन पाठ

जाने या अन्जान में, लगा हो कोई दोष।
हे जिन ! चरण प्रसाद से, होय पूर्ण निर्दोष।।
आह्वानन पूजन विधि, और विसर्जन देव।
नहीं जानते अज्ञ हम, कीजे क्षमा सदैव।।
क्रिया मंत्र द्रवहीन हम, आये लेकर आस।
क्षमादान देकर हमें, रखना अपने पास।।
सुर-नर-विद्याधर कोई, पूजा किए विशेष।
कृपावन्त होके सभी, जाएँ अपने देश।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

आशिका लेने का पद

दोहा- लेकर जिन की आशिका, अपने माथ लगाय।
दुख दरिद्र का नाश हो, पाप कर्म कट जाय।।

श्री पार्श्वनाथ चालीसा

दोहा- हरी-भरी खुशहाल हो, धरती चारों ओर।
चालीसा गाते यहाँ, होके भाव विभोर।।
इस असार संसार से, पाएँ अब विश्राम।
पार्श्वनाथ जिनराज हे, पद में करें प्रणाम।।

(चौपाई)

जय-जय पार्श्वनाथ हितकारी, महिमा तुमरी जग में न्यारी।।1।।
तुम हो तीर्थंकर पद धारी, तीन लोक में मंगलकारी।।2।।
काशी नगरी है मनहारी, सुखी जहाँ की जनता सारी।।3।।
राजा अश्वसेन कहलाए, रानी वामा देवी गाए।।4।।
जिनके गृह में जन्में स्वामी, पार्श्वनाथ जिन अन्तर्यामी।।5।।
देवों ने तव रहस्य रचाया, पाण्डुक वन में न्हवन कराया।।6।।
वन में गये घूमने भाई, तपसी प्रभु को दिया दिखाई।।7।।
पञ्चाग्नी तप करने वाला, अज्ञानी या भोला भाला।।8।।
तपसी तुम क्यों आग जलाते, हिंसा करके पाप कमाते।।9।।
नाग युगल जलते हैं कारे, मरने वाले हैं बेचारे।।10।।
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।।11।।
सर्प देख तपस्वी घबराया, प्रभु ने उनको मंत्र सुनाया।।12।।
नाग युगल मृत्यू को पाएँ, पद्मावती धरणेन्द्र कहाए।।13।।
तपसी मरकर स्वर्ग सिधाया, संवर नाम था देव ने पाया।।14।।
प्रभू बाल ब्रह्मचारी गाए, संयम पाकर ध्यान लगाए।।15।।
पौष कृष्ण एकादशि पाए, अहिच्छत्र में ध्यान लगाए।।16।।
इक दिन देव वहाँ पर आया, उसके मन में बैर समाया।।17।।
किए कई उपसर्ग निराले, मन को कम्पित करने वाले।।18।।
फिर भी ध्यान मग्न थे स्वामी, बनने वाले थे शिवगामी।।19।।

धरणेन्द्र पद्मावति आये, प्रभु के पद में शीश झुकाए ।।20 ।।
पद्मावती ने फण फैलाया, उस पर प्रभु जी को बैठाया ।।21 ।।
धरणेन्द्र ने माया दिखलाई, फण का क्षत्र लगाया भाई ।।22 ।।
चैत कृष्ण को चौथ बताई, विजय हुई समता की भाई ।।23 ।।
प्रभु ने केवल ज्ञान जगाया, समवशरण देवेन्द्र रचाया ।।24 ।।
सवा योजन विस्तार बताए, धनुष पचास गंध कुटि पाए ।।25 ।।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, भव्यों को शिवमार्ग दिखाए ।।26 ।।
गणधर दश प्रभु के बतलाए, गणधर प्रथम स्वयंभू गाए ।।27 ।।
गिरि सम्मेद शिखर प्रभु आए, स्वर्ण-भद्र शुभ कूट बताए ।।28 ।।
योग निरोध प्रभु जी पाए, एक माह का ध्यान लगाए ।।29 ।।
श्रावण शुक्ल सप्तमी आई, खड्गासन से मुक्ती पाई ।।30 ।।
श्रावक प्रभु के पद में आते, अर्चा करके महिमा गाते ।।31 ।।
भक्ती से जो ढोक लगाते, भोगी भोग सम्पदा पाते ।।32 ।।
पुत्रहीन सुत पाते भाई, दुखिया पाते सुख अधिकाई ।।33 ।।
योगी योग साधना पाते, आत्म ध्यान कर शिवसुख पाते ।।34 ।।
पार्श्व प्रभू के अतिशयकारी, तीर्थ बने कई हैं मनहारी ।।35 ।।
बड़ागाँव चँवलेश्वर जानो, विराट नगर नैनागिर मानो ।।36 ।।
नागफणी ऐलोरा गाया, मक्सी अहिच्छत्र बतलाया ।।37 ।।
चूलगिरि तीर्थ बिजौलिया भाई, बीजापुर जानो सुखदाई ।।38 ।।
तीर्थ अड़िंदा भी कहलाए, भरत सिन्धु जहँ स्वर्ग सिधाए ।।39 ।।
'विशद' तीर्थ कई हैं शुभकारी, जिनके पद में ढोक हमारी ।।40 ।।

दोहा- पाठ करें चालीस दिन, दिन में चालिस बार।
तीन योग से पार्श्व का, पावें सौख्य अपार ।।
सुख-शांती सौभाग्य युत, तन हो पूर्ण निरोग।
'विशद' ज्ञान को प्राप्त कर, पावें शिव पद भोग ।।

जाप्य : ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः।

श्री चूलगिरि चालीसा

दोहा- देव-शास्त्र-गुरु पद नमन, करते बारम्बार।
सम्यक् श्रद्धा जो धरें, पावें भव से पार ।।
चूलगिरी जी तीर्थ का, चालीसा शुभकार।
विशद भाव से गा रहे, अतिशय मंगलकार ।।

(चौपाई)

लोकालोक अनन्त बताया, जिसका अन्त कहीं ना पाया ।।1 ।।
पुरुषाकार लोक शुभ जानो, मध्य में मध्य लोक पहिचानो ।।2 ।।
मध्य सुमेरू जिसके गाया, उच्च लाख योजन बतलाया ।।3 ।।
भरत क्षेत्र दक्षिण में जानो, धनुषाकार श्रेष्ठ पहिचानो ।।4 ।।
आर्यखण्ड है मंगलकारी, भारत देश रहा शुभकारी ।।5 ।।
राजस्थान प्रान्त शुभ गाया, जयपुर शहर श्रेष्ठ बतलाया ।।6 ।।
निकट चूलगिरि है शुभकारी, जिसकी छठा रही मनहारी ।।7 ।।
देशभूषण गुरुवर जी आए, तीर्थप्रणेता जो कहलाए ।।8 ।।
सन् उन्नीस सौ त्रेपन जानो, किए प्रेरणा गुरुवर मानो ।।9 ।।
पार्श्वनाथ भगवान का भाई, जन्म कल्याण रहा शिवदायी ।।10 ।।
गुरुवर जिन प्रतिमा पधराए, तीर्थक्षेत्र जो नया बनाए ।।11 ।।
श्याम वर्ण की प्रतिमा सोहे, पार्श्वनाथ की मन को मोहे ।।12 ।।
खड्गासन में जानो भाई, जो है अतिशय मंगलदायी ।।13 ।।
नेमिनाथ की प्रतिमा प्यारी, दर्शन हैं जिनके मनहारी ।।14 ।।
महावीर स्वामी को ध्याएँ, जिनके पावन दर्शन पाएँ ।।15 ।।
वर्तमान चौबीसी जानो, पद्मासन में सोहे मानो ।।16 ।।
खड्गासन चौबीसी भाई, भवि जीवों को मार्ग प्रदायी ।।17 ।।
चरण पादुकाएँ मनहारी, यहाँ शोभतीं मंगलकारी ।।18 ।।
वीर प्रभू खड्गासन गाए, अतिशय जो महिमा दिखलाए ।।19 ।।

चौदह हाथ उच्च बतलाए, धवल रंग में शोभा पाए।।20।।
आदिनाथ की महिमा न्यारी, भरत बाहुबली हैं मनहारी।।21।।
खड्गासन में दर्शन मिलते, हृदय कमल भव्यों के खिलते।।22।।
रत्नमयी जिनबिम्ब निराले, जन–जन का मन हरने वाले।।23।।
विजय यंत्र है विजय प्रदाता, देने वाला जग में साता।।24।।
नवग्रह यंत्र रहा अघहारी, जग जीवों को मंगलकारी।।25।।
जिनवाणी से ज्ञान जगाएँ, नत हो करके शीश झुकाएँ।।26।।
शासन देवी रक्षाकारी, भक्तों की जो है अघहारी।।27।।
अन्य और जिनबिम्ब बताए, दर्शन कर सद्दर्शन पाएँ।।28।।
ध्यान केन्द्र में ध्यान लगाएँ, मन में अतिशय शांती पाएँ।।29।।
दूर–दूर से यात्री आते, दर्शन करके पुण्य कमाते।।30।।
पूजा का सौभाग्य जगाते, दीप जलाकर आरती गाते।।31।।
मन में अति आनन्द मनाते, खुश हो कई विधान रचाते।।32।।
क्षेत्र की महिमा है अतिभारी, ऐसा कहते हैं नर–नारी।।33।।
जो भी जैसी आस लगाते, प्रभु चरणों में फल वे पाते।।34।।
गाते हैं कोई भजनावलियाँ, खिलती उनके मन की कलियाँ।।35।।
कोई पावन स्तुति गाते, भाव से प्रभु का न्हवन कराते।।36।।
नाम जाप है मन्त्र निराला, जीवों का अघ हरने वाला।।37।।
सम्यक् दर्शन ज्ञान जगाएँ, अतिशय सम्यक् चारित पाएँ।।38।।
चरणों में है अरज हमारी, पूर्ण करो हे त्रिपुरारी।।39।।
मन में हे प्रभु आस लगाए, नाथ ! आपके द्वारे आए।।40।।

दोहा– चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख शांती ऐश्वर्य पा, बनें श्री का नाथ।।
रोग–शोक क्लेशादि से, मुक्ति मिले अविराम।
अनुक्रम से संयम धरें, पावे वे शिवधाम।।

जाप्य– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं चूलगिरि क्षेत्र स्थित सर्व जिनवरेभ्यो नमः।

श्री नवग्रह शांति चालीसा

दोहा– नव देवों के पद युगल, वन्दन बारम्बार।
अर्चा करते भाव से, पाने भवदधि पार।।
चालीसा नवग्रह का यहाँ, पढ़ते योग सम्हार।
सुख–शांति सौभाग्य पा, करें आत्म उद्धार।।

(चौपाई)

नवग्रह नभ में रहने वाले, सारे जग से रहे निराले।।1।।
रवि शशि मंगल बुध गुरु जानो, शुक्र शनि राहु केतु मानो।।2।।
कर्म असाता उदय में आए, तब ये नवग्रह खूब सताएँ।।3।।
कभी व्याधि लेकर के आते, कभी उदर पीड़ा पहुँचाते।।4।।
आँख कान में दर्द बढ़ाते, मन में बहु बेचैनी लाते।।5।।
कभी होय व्यापार में हानी, कभी करें नौकर मनमानी।।6।।
कभी चोर चोरी को आवें, छापा मार कभी आ जावें।।7।।
कभी कलह घर में बढ़ जावे, कभी देह में रोग सतावे।।8।।
बेटा–बेटी कही न माने, अपने अपना न पहिचाने।।9।।
प्राणी संकट में पड़ जावे, शांति की ना राह दिखावे।।10।।
ऐसे में भी प्रभु की भक्ति, हर कष्टों से देवे मुक्ती।।11।।
ग्रहारिष्ट रवि जिसे सताए, पद्म प्रभू को वह नर ध्याये।।12।।
जिन्हें चन्द्र ग्रह अधिक सताए, चन्द्र प्रभु को भाव से ध्याये।।13।।
मंगल ग्रह भी जिन्हें सताए, वासुपूज्य जिन शांति दिलाएँ।।14।।
ग्रहारिष्ट बुध पीड़ा हारी, अष्ट जिनेन्द्र रहे शुभकारी।।15।।
विमलानन्त धर्म अर पाए, शांति कुन्थु नमि वीर कहाए।।16।।
गुरु अरिष्ट ग्रह शांति प्रदायी, अष्ट जिनेन्द्र रहे सुखदायी।।17।।
ऋषभाजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति सुपार्श्व विमल पद वंदन।।18।।
तीर्थंकर शीतल जिन स्वामी, गुरु ग्रह शांति कारक नामी।।19।।
शुक्र अरिष्ट शांति कर गाए, पुष्पदन्त जिनराज कहाए।।20।।

शनि अरिष्ट ग्रह शांती दाता, श्री मुनिसुव्रत रहे विधाता ।।21 ।।
राहू ग्रह नाशक कहलाए, नेमिनाथ तीर्थंकर गाए ।।22 ।।
मल्लि पार्श्व का ध्यान जो करते, केतू ग्रह की बाधा हरते ।।23 ।।
जो चौबिस तीर्थंकर ध्याए, जीवन में वह शांति उपाए ।।24 ।।
गगन गमन वह करते भाई, मानव को होते दुखदायी ।।25 ।।
जन्म लग्न राशी को पाए, मानव को ग्रह बड़ा सताए ।।26 ।।
ज्ञानी जन उस ग्रह के स्वामी, तीर्थंकर को भजते नामी ।।27 ।।
ग्रह हारी दिन जिन को ध्याएँ, पूजा कर सौभाग्य जगाएँ ।।28 ।।
करें आरती मंगलकारी, विशद भाव से शुभ मनहारी ।।29 ।।
चालीसा चालिस दिन गाए, मंत्र जाप भी करते जाएँ ।।30 ।।
मंगलमयी विधान रचाएँ, शांति भाव से ध्यान लगाएँ ।।31 ।।
अन्तिम श्रुत केवली गाए, भद्रबाहु स्वामी कहलाए ।।32 ।।
नवग्रह शांति स्तोत्र रचाए, चौबीसों जिनवर को ध्याए ।।33 ।।
शान्त्यर्थ शुभ शांतिधारा, भवि जीवों को बने सहारा ।।34 ।।
नौ तीर्थंकर नवग्रह हारी, कहलाए हैं मंगलकारी ।।35 ।।
चन्द्रप्रभु वासुपूज्य बताए, मल्ली वीर सुविधि जिन गाए ।।36 ।।
शीतल मुनिसुव्रत जिन स्वामी, नेमि पार्श्व जिन अन्तर्यामी ।।37 ।।
नवग्रह शांती जिन को ध्याते, पद में सादर शीश झुकाते ।।38 ।।
'विशद' भावना हम ये भाएँ, सुख-शांती सौभाग्य जगाएँ ।।39 ।।
हमें सहारा दो हे स्वामी, बनें मोक्ष के हम अनुगामी ।।40 ।।

दोहा- चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भक्ति से लोग।
रोग-शोक क्लेशादि का, रहे कभी न योग ।।
नवग्रह शांती के लिए, ध्याते जिन चौबीस।
सुख-शांती आनन्द हो, 'विशद' झुकाते शीश ।।

जाप्य : ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा नमः सर्व ग्रहारिष्ट शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

महामृत्युञ्जय चालीसा

दोहा- परमेष्ठी जिन पाँच हैं, तीर्थंकर चौबीस।
मृत्युञ्जय हम पूजते, चरणों में धर शीश ।।

(चौपाई)

कर्म घातिया चार नशाए, अतः आप अर्हत् कहलाए ।।1 ।।
अनन्त चतुष्टय जो प्रगटाए, दर्शन ज्ञान-वीर्य सुख पाए ।।2 ।।
दोष अठारह पूर्ण नशाए, छियालिस गुणधारी कहलाए ।।3 ।।
चौंतिस अतिशय जिनने पाए, प्रातिहार्य आठों प्रगटाए ।।4 ।।
समवशरण शुभ देव रचाए, खुश हो जय-जयकार लगाए ।।5 ।।
समवशरण की शोभा न्यारी, उससे भी रहते अविकारी ।।6 ।।
देव शरण में प्रभु के आते, चरण-कमल तल कमल रचाते ।।7 ।।
सौ योजन सुभिक्षता होवे, सब प्रकार की आपद खोवे ।।8 ।।
भक्त शरण में जो भी आते, चतुर्दिशा से दर्शन पाते ।।9 ।।
गगन गमन प्रभु जी शुभ पाते, प्राणी मैत्री भाव जगाते ।।10 ।।
प्रभो ! ज्ञान के ईश कहाए, अनिमिष दृग प्रभु के बतलाए ।।11 ।।
दिव्य देशना प्रभू सुनाते, सुर-नर-पशु सुनकर हर्षाते ।।12 ।।
मृत्युञ्जय जिन प्रभू कहाते, जीत मृत्यु को शिव पद पाते ।।13 ।।
ज्ञान अनन्त दर्श सुख पाते, वीर्य अनन्त प्रभू प्रगटाते ।।14 ।।
सिद्ध सनातन आप कहाए, सिद्धशिला पर धाम बनाए ।।15 ।।
अनुपम शिवसुख पाने वाले, ज्ञान शरीरी रहे निराले ।।16 ।।
नित्य निरंजन जो अविनाशी, गुण अनन्त की हैं प्रभु राशी ।।17 ।।
तुमने उत्तम संयम पाया, जिसका फल यह अनुपम गाया ।।18 ।।
रत्नत्रय पा ध्यान लगाया, तप से निज को स्वयं तपाया ।।19 ।।
कई ऋद्धियाँ तुमने पाईं, किन्तू वह तुमको न भाईं ।।20 ।।

उनसे भी अपना मुख मोड़ा, मुक्ति वधू से नाता जोड़ा ।।21 ।।
सहस्र आठ लक्षण के धारी, आप बने प्रभु मंगलकारी ।।22 ।।
सहस्र आठ शुभ नाम उपाए, सार्थक सारे नाम बताए ।।23 ।।
नाम सभी शुभ मंत्र कहाए, जो भी इन मंत्रों को ध्याए ।।24 ।।
सुख–शांती सौभाग्य जगाए, अपने सारे कर्म नशाए ।।25 ।।
विषय भोग में नहीं रमाए, रत्नत्रय पा संयम पाए ।।26 ।।
तीन योग से ध्यान लगाए, निज स्वरूप में वह रम जाए ।।27 ।।
संवर करें निर्जरा पावे, अनुक्रम से वह कर्म नशावे ।।28 ।।
बीजाक्षर भी पूजें ध्यावें, जिनपद में नित प्रीति बढ़ावें ।।29 ।।
कभी मंत्र जपने लग जाए, कभी प्रभू को हृदय बसाए ।।30 ।।
स्वर व्यंजन आदी भी ध्याए, अतिशय कर्म निर्जरा पाए ।।31 ।।
पुण्य प्राप्त करता शुभकारी, शिवपथ का कारण मनहारी ।।32 ।।
इस भव का सब वैभव पाए, उसके मन को वह न भाए ।।33 ।।
तजकर जग का वैभव सारा, जिनने भेष दिगम्बर धारा ।।34 ।।
वह बनते त्रिभुवन के स्वामी, हम भी बने प्रभू अनुगामी ।।35 ।।
यही भावना रही हमारी, कृपा करो हम पर त्रिपुरारी ।।36 ।।
मृत्युञ्जय हम भी हो जाएँ, इस जग में अब नहीं भ्रमाएँ ।।37 ।।
जागे अब सौभाग्य हमारा, मिले चरण का नाथ सहारा ।।38 ।।
शिव पद जब तक ना पा जाएँ, तब तक तुमको हृदय सजाएँ ।।39 ।।
नित–प्रति हम तुमरे गुण गाएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ ।।40 ।।

दोहा– चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
सुख–शांति आनन्द पा, बने श्री का नाथ ।।
सुत सम्पत्ति सुगुण पा, होवे इन्द्र समान।
मृत्युञ्जय होके 'विशद', पावे पद निर्वाण ।।

जाप्य : ॐ ह्रीं अर्हं झं वं व्हः पः हः मम सर्वापमृत्युञ्जय कुरु–कुरु स्वाहा

''अन्तर्मुहूर्त में दीक्षा लेते ही केवलज्ञान प्राप्त करने वाले
1008 श्री भरतेश्वर स्वामी का चालीसा

श्री भरत चालीसा

दोहा– नवदेवों को नमन है, नवकोटी के साथ।
चक्रवर्ति भरतेश जी, बने श्री के नाथ ।।
चालीसा जिनका विशद, गाते हैं शुभकार।
शिवपद के राही बनें, पाएँ मोक्ष का द्वार ।।

(चौपाई)

पुरुषाकार लोक ये जानो, मध्य में मध्य लोक पहिचानो ।।1 ।।
जम्बू द्वीप रहा मनहारी, जिसके मध्य श्रेष्ठ शुभकारी ।।2 ।।
मध्य सुमेरु जिसके गाया, लख योजन ऊँचा बतलाया ।।3 ।।
भरत क्षेत्र दक्षिण में जानो, धनुषाकार श्रेष्ठ पहिचानो ।।4 ।।
अवसर्पिणी ये काल बताया, अन्त तीसरे काल का आया ।।5 ।।
है साकेत नगर जगनामी, जन्म लिए आदीश्वर स्वामी ।।6 ।।
धर्म प्रवर्तक जो कहलाए, शिक्षक षट् कर्मों के गाए ।।7 ।।
नन्दा जिनकी थी पटरानी, धर्म परायण सद् श्रद्धानी ।।8 ।।
जिनके पुत्र भरत कहलाए, अन्य भाई सौ जिनके गाए ।।9 ।।
चक्ररत्न को जिनने पाया, छह खण्डों पे राज्य चलाया ।।10 ।।
साठ हज्जार वर्ष तक भाई, दिग्विजयी यात्रा करवाई ।।11 ।।
आर्य खण्ड जिसमें शुभ जानो, पञ्च म्लेच्छ खण्ड भी मानो ।।12 ।।
भरत क्षेत्र जिसमें शुभ गाया, भारत देश नाम शुभ पाया ।।13 ।।
भरतेश्वर के नाम से भाई, देश का नाम पड़ा सुखदायी ।।14 ।।
वृषभाचल पर नाम लिखाना, भरतेश्वर ने मन में ठाना ।।15 ।।
किन्तू वहाँ जगह ना पाए, तब मन में वैराग्य जगाए ।।16 ।।
गृह में रहकर हुए जो त्यागी, पाके सब कुछ हुए ना रागी ।।17 ।।
त्रय सन्देश साथ में आए, केवलज्ञान पिता जी पाए ।।18 ।।

आयुध शाला में शुभ जानो, चक्ररत्न प्रगटा है मानो ।।19 ।।
प्रथम पुत्र भरतेश्वर स्वामी, पाए हैं इस जग में नामी ।।20 ।।
पहले किस की खुशी मनाऐं, असमंजस था कहाँ पे जाएँ ।।21 ।।
पहले समवशरण में आए, केवलज्ञान की खुशी मनाए ।।22 ।।
धर्मेश्वर ने धर्म निभाया, धर्मश्रेष्ठ है ऐसा गाया ।।23 ।।
ऋषभाचल पर अतिशयकारी, रत्न स्वर्णमय मंगलकारी ।।24 ।।
मंदिर श्रेष्ठ बहत्तर गाए, भरतेश्वर जी जो बनावाए ।।25 ।।
रत्नमयी जिनमें प्रतिमाएँ, जन-जन के मन को जो भाएँ ।।26 ।।
भाव सहित जिनमें पधराए, भारी उत्सव वहाँ मनाए ।।27 ।।
जिनबिम्बों का न्हवन कराया, जिन पूजा कर पुण्य कमाया ।।28 ।।
अतिशय कई विधान रचाए, वहाँ किमिच्छित दान दिलाए ।।29 ।।
महलों में कई लोग बुलाए, यज्ञोपवीत उन्हें दिलवाए ।।30 ।।
ब्राह्मण वर्ण चलाने वाले, भरतेश्वर जी हुए निराले ।।31 ।।
लाख चौरासी पूरब भाई, भरतेश्वर ने आयू पाई ।।32 ।।
लाख सतत्तर पूरब जानो, कुमार काल जिनका पहिचानो ।।33 ।।
ऊँचे धनुष पाँच सौ गाये, छह लख पूरब राज्य चलाए ।।34 ।।
मन में फिर वैराग्य जगाए, केश लुंचकर दीक्षा पाए ।।35 ।।
अन्तर्मुहूत का ध्यान लगाए, अतिशय केवलज्ञान जगाए ।।36 ।।
एक लाख वर्षों तक स्वामी, रहे केवली अन्तर्यामी ।।37 ।।
जग को सद संदेश सुनाए, जीवों को सन्मार्ग दिखाए ।।38 ।।
अपने सारे कर्म नशाए, अष्टापद से मुक्ती पाए ।।39 ।।
हम भी यह सौभाग्य जगाएँ, 'विशद' मोक्ष पदवीं को पाएँ ।।40 ।।

दोहा- पढ़े भाव के साथ, चालीसा चालीस दिन।
बने श्री का नाथ, शिवपद का हानी बने।।
रोग-शोक हो दूर, सुख-शांती आनन्द हो।
सद्गुण से भरपूर, होकर के शिवपद लहे।।

ऋषि मण्डल स्तोत्र

(चौपाई)

आदि ''अ'' अक्षर ह अन्त, ख से लेकर व पर्यन्त।
रेफ में अग्नी ज्वाला नाद, बिन्दु युक्त अर्हं उत्पाद।।1 ।।
अग्नी ज्वाला सम आक्रान्त, मन का मल करता उपशांत।
हृदय कमल पर दैदीप्यमान, वह पद निर्मल नमूँ महान।।2 ।।
नमो अर्हद्भ्यः ईशेभ्यः, ॐ नमो नमः सिद्धेभ्यः।
ॐ नमो सर्व सूरिभ्यः, ॐ नमः उपाध्यायेभ्यः।।3 ।।
ॐ नमो सर्व साधुभ्यः, ॐ नमः तत्त्व दृष्टिभ्यः।
ॐ नमः शुद्ध बोधेभ्यः, ॐ नमः चारित्रेभ्यः।।4 ।।
अर्हन्तादिक पद ये आठ, स्थापन करके दिश आठ।
निज निज बीजाक्षर के साथ, लक्ष्मीप्रद हैं सुखकर नाथ।।5 ।।
पहला पद सिर रक्षक जान, द्वितिय मस्तक का पहिचान।
तीजा पद नेत्रों का मान, करे चतुष्पद नाशा त्राण।।6 ।।
पञ्चम मुख का रक्षक होय, ग्रीवा का छठवाँ पद सोय।
सप्तम पद नाभी का जान, अष्टम द्वय पद का पहिचान।।7 ।।
प्रणवाक्षर ॐ पुनः हकार, रेफ बिन्दुयुत हो शुभकार।
द्वय तिय पञ्चम षष्ठी जान, सप्त अष्ट दश द्वादश मान।।8 ।।
हीं नमः विधि के अनुसार, मंत्र बने शुभ अतिशयकार।
ऋषि मण्डल स्तव शुभकार, श्रेयस्कर है मंत्र अपार।।9 ।।

जाप- ॐ ह्राँ ह्रिं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा सम्यक्दर्शनज्ञान चारित्रेभ्यो ह्रीं नमः।

(शम्भू छंद)

सिद्ध मंत्र में बीजाक्षर नव, अष्टादश शुद्धाक्षर वान।
भक्ती युत आराधक को शुभ, फलदायी है मंत्र महान।।10 ।।
जम्बूद्वीप लवणोदधि वेष्टित, जम्बु वृक्ष जिसकी पहचान।
अर्हदादि अधिपति वसु दिश में, वसु पद शोभित महिमावान।।11 ।।

जम्बूद्वीप के मध्य सुमेरू, लक्ष कूट युत शोभावान।
ज्योतिष्कों के ऊपर-ऊपर, घूम रहे हैं श्रेष्ठ विमान।।12।।
हीं मंत्र स्थापित जिस पर, अर्हंतों के बिम्ब महान।
निज ललाट में स्थित कर मैं, नमूँ निरंजन सतत् प्रधान।।13।।

(चौपाई)

जिन अज्ञान रहित घन गाए, अक्षय निर्मल शांत कहाए।
बहुल निरीह सारतर स्वामी, निरहंकार सार शिवगामी।।14।।
अनुद्धूत शुभ सात्विक जानो, तैजस बुद्ध सर्वरीसम मानो।
विरस बुद्ध स्फीत कहाए, राजस मत तामस कहलाए।।15।।
पर-परापर पर कहलाए, सरस विरस साकार बताए।
निराकार परापर जानो, परातीत पर भी पहिचानो।।16।।
सकल निकल निर्भृत कहलाए, भ्रांति वीत संशय बिन गाए।
निराकांक्ष निर्लेप बताए, पुष्टि निरंजन प्रभु कहलाए।।17।।
ब्रह्माणमीश्वर बुद्ध निराले, सिद्ध अभंगुर ज्योती वाले।
लोकालोक प्रकाशक जानो, महादेव जिनको पहचानो।।18।।
बिन्दू मण्डित रेफ कहाया, चौथे स्वर युत शांत बताया।
वर्ण हीं बीज सुखदायी, ध्यान योग्य अर्हत् के भाई।।19।।
एक वर्ण द्विवर्ण गिनाए, त्रिवर्णक चतु वर्णक गाए।
पञ्चवर्ण महावर्ण निराले, परापरं पर शब्दों वाले।।20।।
उन बीजों में स्थित जानो, वृषभादिक जिन उत्तम मानो।
निज-निज वर्णयुक्त बिन गाए, सब ध्यातव्य यहाँ बतलाए।।21।।
'नाद' चंद्र सम श्वेत बताया, 'बिन्दू' नील वर्ण सम गाया।
'कला' अरुण सम शांत कहाई, 'स्वर्णाभा' चउदिश में गाई।।22।।
हरित वर्ण युत 'ई' शुभ जानो, 'ह र' स्वर्ण वर्ण मय जानो।
वर्णानुसार प्रभू को ध्याएँ, चौबिस जिन पद शीश झुकाएँ।।23।।
चन्द्र पुष्प जिन श्वेत बताए, नाद के आश्रय से शुभ गाए।
नेमी मुनिसुव्रत जिन जानो, बिन्दु मध्य में प्रभु को मानो।।24।।

कला सुपद शुभ है शिवगामी, वासुपूज्य पद्मप्रभ स्वामी।
ई स्थित सोहे मनहारी, श्री सुपार्श्व पार्श्व अविकारी।।25।।
शेष सभी तीर्थंकर जानो, ह् र् के आश्रय भी मानो।
माया बीजाक्षर में गाए, चौबिस तीर्थंकर बतलाए।।26।।
राग-द्वेष गत मोह कहाए, सर्व पाप से वर्जित गाए।
सर्वलोक में जिन शुभकारी, सदा सर्वदा मंगलकारी।।27।।

(चौपाई)

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, सर्पों से न बाधा होय।।28।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, नागिन से न बाधा होय।।29।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, गोहों से न बाधा होय।।30।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, वृश्चिक से न बाधा होय।।31।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, काकिनि से न बाधा होय।।32।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, डाकिनि से न बाधा होय।।33।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, साकिनि से न बाधा होय।।34।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, राकिनि से न बाधा होय।।35।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, लाकिनि से न बाधा होय।।36।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, शाकिनि से न बाधा होय।।37।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, हाकिनि से न बाधा होय।।38।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, भैरव से न बाधा होय।।39।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, राक्षस से न बाधा होय।।40।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, व्यंतर से न बाधा होय।।41।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, भेकस से न बाधा होय।।42।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, लीनस से न बाधा होय।।43।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, मम ग्रह से न बाधा होय।।44।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, चोरों से न बाधा होय।।45।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, अग्नी से न बाधा होय।।46।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, श्रृंगिण से न बाधा होय।।47।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, दंष्ट्रिण से न बाधा होय।।48।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, रेलप से न बाधा होय।।49।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, पक्षी से न बाधा होय।।50।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, मुद्गल से न बाधा होय।।51।।

श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, जृंम्भक से न बाधा होय।।52।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, मेघों से न बाधा होय।।53।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, सिंहों से न बाधा होय।।54।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, शूकर से न बाधा होय।।55।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, चीतों से न बाधा होय।।56।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, हाथी से न बाधा होय।।57।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, राजा से न बाधा होय।।58।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, शत्रू से न बाधा होय।।59।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, ग्रामिण से न बाधा होय।।60।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, दुर्जन से न बाधा होय।।61।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, व्याधी से न बाधा होय।।62।।
श्री जिनेन्द्र देवाधिदेव, देह चक्र की आभा एव।
उससे ढ़का हुआ मैं सोय, सब जन से न बाधा होय।।63।।

(चौपाई)

श्री गौतम की मुद्रा प्यारी, जग में श्रुत उपलब्धी कारी।
उससे प्रखर ज्योति को पाए, अर्हत् सर्व निधीश्वर गाए।।64।।

देव सभी पाताल निवासी, स्वर्ग लोक पृथ्वी के वासी।
देव स्वर्ग वासी शुभकारी, रक्षा मिल सब करें हमारी।।65।।
अवधि ज्ञान ऋद्धी के धारी, परमावधि ज्ञानी अविकारी।
दिव्य मुनी सब ऋद्धिधारी, रक्षा वह सब करें हमारी।।66।।
भावन व्यन्तर ज्योतिष वासी, वैमानिक के रहे प्रवासी।
श्रुतावधि देशावधि धारी, योगी के पद ढ़ोक हमारी।।67।।
परमावधि सर्वावधि धारी, संत दिगम्बर हैं अविकारी।
बुद्धि ऋद्धि सर्वौषधि पाए, ऋद्धीधारी संत कहाए।।68।।
बल अनन्त ऋद्धीधर पाए, तप्त सुतप उन्नति बढ़ाए।
क्षेत्र ऋद्धि रस ऋद्धीधारी, ऋद्धि विक्रिया धर अविकारी।।69।।
तप सामर्थ्य मुनी अविकारी, क्षीण सद्म महानस धारी।
यतीनाथ जो भी कहलाते, उनके पद में हम सिरनाते।।70।।
तारक जन्मार्णव शुभकारी, दर्शन ज्ञान चरित के धारी।
भव्य भदन्त रहे जग नामी, इच्छित फल पावें हे स्वामी।।71।।

(शम्भू छंद)

ॐ श्री ह्री कीर्ति लक्ष्मी, गौरी चण्डी सरस्वती।
क्लिन्नाजिता मदद्रवा धृति, नित्या विजया जयावती।।72।।
कामांगा कामबाणा नन्दा, नन्दमालिनी अरु माया।
कलिप्रिया रौद्री मायाविनी, काली कला करें छाया।।73।।
रक्षाकारी महादेवियाँ, जिन शासन की सर्व महान।
कांति लक्ष्मी धृति मति देवें, क्षेम करें सब जगत प्रधान।।74।।
दुर्जन भूत पिशाच क्रूर अति, मुद्गल हैं वेताल प्रधान।
वह प्रभाव से देव-देव के, सब उपशान्त करें गुणगान।।75।।
श्री ऋषि मण्डल स्तोत्र यह, दिव्य गोप्य दुष्प्राप्त महान।
जिन भाषित है तीर्थनाथ कृत, रक्षा कारक महिमावान।।76।।
रण अग्नी जल दुर्ग सिंह गज, का संकट हो नृप दरबार।
घोर विपिन श्मशान में भाई, रक्षक मंत्र रहा मनहार।।77।।

राज्य भ्रष्ट को राज्य प्राप्त हो, सुपद भ्रष्ट पद पाते लोग।
संशय नहीं हैं इसमें पावें, लक्ष्मी हीन श्री का योग।।78।।
भार्यार्थी भार्या पाते हैं, पुत्रार्थी पाते सुत श्रेष्ठ।
धन के इच्छुक धन पाते हैं, नर जो स्मरण करें यथेष्ट।।79।।
स्वर्ण रजत कांसे पर लिखकर, उसे पूजते जो भी लोग।
शाश्वत महा सिद्धियों का वह, अतिशय पाते हैं संयोग।।80।।
शीश कण्ठ बाहू में पहनें, भूर्जपत्र पर लिखिये मंत्र।
भय विनाश होते हैं उनके, जो धारें अतिशय शुभ यंत्र।।81।।
भूत-प्रेत ग्रह यक्ष दैत्य सब, या पिशाच आदिक कृत कष्ट।
वात पित्त कफ आदि रोग भी, हो जाते हैं सारे नष्ट।।82।।
भूर्भुवः स्वः त्रय पीठ स्थित, शाश्वत हैं जिनबिम्ब महान।
उनके दर्शन वन्दन स्तुति, श्रेष्ठ सुफल हैं जगत प्रधान।।83।।
महा स्तोत्र यह गोपनीय शुभ, जिस किसको न देना आप।
मिथ्यात्वी को देने से हो, पद-पद पर शिशु वध का पाप।।84।।
चौबिस जिन की पूजा द्वारा, आचाम्लादिक तप के योग।
अष्ट सहस्र जापकर विधिवत्, कार्य सिद्ध करते हैं लोग।।85।।
प्रतिदिन प्रातः अष्टोत्तर शत्, इसी मंत्र का करते जाप।
सुख-सम्पत्ती पाते इच्छित, रोगों का मिटता संताप।।86।।
प्रातः आठ माह तक नित प्रति, इस स्तोत्र का करके पाठ।
तेज पुञ्ज अर्हन्त बिम्ब के, दर्शन से हों ऊँचे ठाठ।।87।।
सप्त भवों में भाव समाधि, जिन दर्शन से होते मुक्त।
परमानन्द प्राप्त करते हैं, होते शाश्वत सुख से युक्त।।88।।

दोहा- यह स्तोत्र महास्तोत्र है, सब संस्तुतियों युक्त ।
पाठ जाप स्मरण कर, दोषों से हों मुक्त।।
कर स्तोत्र महास्तोत्र का, पाठ स्मरण जाप।
दोषों से मुक्ती मिले, 'विशद' मिटे संताप।।

।। इति ऋषि मण्डल स्तोत्र समाप्त।।

भक्तामर स्तोत्र भाषा

–आचार्य श्री विशदसागरजी

भक्त चरण में झुकते आके, मुकुट मणी की कांति महान।
पाप तिमिर सब नाशनहारी, दिव्य दिवाकर सम्यक् ज्ञान।।
भव समुद्र में पतित जनों को, देते हैं जो आलम्बन।
आदिनाथ के चरण कमल में, करते हम शत्–शत् वन्दन।।1।।
सकल तत्त्व के ज्ञाता अनुपम, सकल बुद्धि पटु धी धारी।
इन्द्रराज भी स्तुति करता, नत होकर जन मन हारी।।
हैं स्तुत्य प्रथम जिन स्वामी, महिमा हम भी गाते हैं।
जयकारा करते हैं चरणों, सादर शीश झुकाते हैं।।2।।
मन्द बुद्धि हम स्तुति करते, नहीं जरा भी शर्माते।
विज्ञ जनों से अर्चित हे प्रभु, ज्ञानी आप कहे जाते।।
जल में चन्द्र बिम्ब की छाया, पाने बालक जिद करता।
सत्य स्वरूप जानने वाला, ज्ञानी कर्मों से डरता।।3।।
चन्द्र कांति से बढ़कर हे जिन !, आप धवल कांती पाए।
हे गुणसागर ! महिमा गाने, में सुरगुरु भी थक जाए।।
नक्र चक्र मगरादिक होवें, प्रलय काल की चले बयार।
कौन भुजाओं से सागर को, कर सकता है बोलो पार।।4।।
शक्ति नहीं भक्ती से प्रेरित, हो स्तुति करने आए।
नाथ ! आपके दर्शन करके, मन ही मन में हर्षाए।।
निज शिशु की रक्षा हेतू मृगि, अहो विचार कहाँ करती।
जाकर मृगपति के सम्मुख वह, रक्षा कर संकट हरती।।5।।
अल्प ज्ञानि हम ज्ञानी जन से, हास्य कराते हैं इक मात्र।
भक्ति आपकी प्रेरित करती, अतः भक्ति के हैं हम पात्र।।
आम्र वृक्ष पर वौर आएँ तब, कोयल करे मधुर शुभगान।
नाथ आपकी भक्ती करती, प्रेरित करने को गुणगान।।6।।
स्तुति से हे नाथ ! आपकी, कट जाते चिर संचित पाप।
शीघ्र भाग जाते हैं क्षण में, जरा नहीं रहता संताप।।

तीन लोक में भ्रमर सरीखा, तम छाया भारी घन घोर।
पूर्ण नाश हो जाता क्षण में, सूर्योदय होते ही भोर।।7।।
हूँ मतिमान आपकी फिर भी, शुभ स्तुति आरम्भ करी।
चित्त हरण करती जन–जन का, भक्ति आपकी शांति भरी।।
कमल पत्र पर जल कण जैसे, मोती की उपमा पाए।
नाथ ! आपकी स्तुति जग में, सज्जन का मन हर्षाए।।8।।
प्रभु स्तोत्र आपका क्षण में, सारे दोष विनाश करे।
पुण्य कथा भी प्रभू आपकी, जन्म–जन्म के पाप हरे।।
सहस रश्मि वाला सूरज ज्यों, गगन में रहता है अतिदूर।
सागर में कमलों को देता, सूर्य प्रभा अपनी भरपूर।।9।।
त्रिभुवन तिलक आप हो स्वामी, सब जीवों के नाथ कहे।
सद्भक्तों को निज सम करते, इसमें क्या आश्चर्य रहे।।
धनी लोग स्वाश्रित को धन दे, कर लेते हैं स्वयं समान।
नहीं करे तो कौन कहेगा, स्वामी को हे नाथ ! महान।।10।।
नाथ ! आपका दर्शन करके, भक्त हृदय में होता हर्ष।
और नहीं सन्तोष कहीं है, बिना आपके करके दर्श।।
क्षीर सिन्धु का चन्द्र किरण सम, जो मानव करता जलपान।
कालोदधि का खारा पानी, कौन पियेगा हो अज्ञान।।11।।
हुआ आपके तन का स्वामी, जितने अणुओं से निर्माण।
उतने ही अणु थे धरती पर, शांत रागमय श्रेष्ठ महान।।
हे अद्वितीय शिरोमणी प्रभु, तीन लोक के आभूषण।
नहीं आपसा सुन्दर कोई, नहीं आपसा आकर्षण।।12।।
सुन्दर अनुपम मुख वाले जिन, सुर नर नाग नेत्रहारी।
तीन लोक की उपमा जीते, हे निर्ग्रन्थ ! भेष धारी।।
है कलंक से युक्त चन्द्रमा, उससे तुलना कौन करे।
हो पलास सा फीका दिन में, वही चन्द्रमा दीन अरे।।13।।
कला कलाओं से बढ़के है, पूर्ण चन्द्रमा कांतीमान।
तीन लोक में व्याप रहे हैं, प्रभु के गुण भी पूर्ण महान।।

जिन गुण विचरें तीन लोक में, जगन्नाथ का पा आधार।
कौन रोक सकता है उसको, किसको है इतना अधिकार।।14।।
नहीं डिगा पाई प्रभु का मन, हुईं देवियाँ भी लाचार।
इसमें क्या आश्चर्य है कोई, कामदेव ने मानी हार।।
प्रलय काल की वायू चलती, पर्वत भी गिर-गिर जाते।
हिलता नहीं सुमेरू फिर भी, ऐसी अचल शक्ति पाते।।15।।
धुआँ तेल बाती बिन दीपक, नाथ ! आप कहलाते हो।
तीनों लोक प्रकाशित करते, शिव पथ आप दिखाते हो।।
वायू ऐसी तेज चले कि, गिरि शिखर उड़-उड़ जाए।
एक अलौकिक दीप आप हो, कोई नहीं बुझा पाए।।16।।
उदय अस्त न होता जिसको, और न राहु ग्रस पाए।
तीनों लोक का ज्ञान आपका, एक साथ सब दिखलाए।।
घने मेघ ढक सकें कभी न, ना प्रभाव कम हो पाता।
महिमाशाली दिनकर चरणों, स्वयं आपके झुक जाता।।17।।
मोह महातम के नाशक प्रभु, सदा उदित रहते स्वामी।
राहु गम्य न मेघ से ढ़कते, हे शिवपथ ! के अनुगामी।।
अतुल कांतिमय रूप आपका, मुख मण्डल भी दमक रहा।
जगत शिरोमणि हे शशांक ! जिन, तुमसे जग ये चमक रहा।।18।।
मुख मण्डल जिन दिव्य तेजमय, अन्धकार का करे विनाश।
दिन में सूर्य और रात्री में, चन्द्र बिम्ब की फिर क्या आस।।
धान्य खेत में पके हुए शुभ, लहराएँ अतिशय अभिराम।
जल से भरे सघन मेघों का, रहा बताओ फिर क्या काम।।19।।
शोभित होता प्रभू आपका, स्वपर प्रकाशी केवल ज्ञान।
हरिहरादि देवों में वैसा, प्रकट नहीं हो सके प्रधान।।
महारत्न ज्योतिर्मय किरणों, वाला शुभ देखा जाता।
किरणाकुलित काँच क्या वैसी, उत्तम आभा को पाता।।20।।
हरिहरादि देवों का हमने, माना उत्तम अवलोकन।
नहिं सन्तोष प्राप्त करता है, बिना आपको देखे मन।।

तुम्हें देखने से हे स्वामी !, लाभ हुआ मुझको भारी।
भूला भटका चंचल मेरा, चित्त हुआ है अविकारी।।21।।
जहाँ सैकड़ों सुत को जनने, वाली सौ-सौ माताएँ।
मगर आपको जनने का, सौभाग्य श्रेष्ठ जननी पाएँ।।
सर्व दिशाएँ नक्षत्रों को, पाती ना कोई खाली।
पूर्ण प्रतापी सूरज को बस, पूर्व दिशा जानने वाली।।22।।
हे मुनियों के नाथ आपका, परम पुरुष करते गुणगान।
सूर्यकान्त सम तेजवंत हो, मृत्युञ्जय मेरे भगवान।।
नाथ ! आपको छोड़ कोई ना, शिवमारग दिखलाता है।
विशद आपको ध्याने वाला, मृत्युञ्जय हो जाता है।।23।।
आदिब्रह्म ईश्वर जगदीश्वर, एकानेक अनन्त मुनीश।
विजित योग अक्षय मकरध्वज, विमलज्ञान मय हे जगदीश !।।
जगन्नाथ जगतीपति आदिक, कहलाते हो हे वागीश !।
इत्यादिक नामों के द्वारा, जाने जाते हे योगीश !।।24।।
केवल ज्ञान बोधि को पाने, वाले आप कहाए बुद्ध।
त्रय लोकों के शोक हरणहर, शंकर आप कहाते शुद्ध।।
मोक्ष मार्ग दर्शाने वाले, आप विधाता कहे जिनेश।
धर्म प्रवर्तक हे पुरुषोत्तम !, और कौन होंगे अखिलेश।।25।।
तीन लोक के दुखहर्त्ता हे !, आदि जिनेश्वर तुम्हें नमन्।
भूमण्डल के आभूषण प्रभु, हे परमेश्वर तुम्हें नमन्।।
अखिलेश्वर हे तीन लोक के, तव पद बारम्बार नमन्।
भव सिन्धू के शासक अनुपम, भवि जीवों का चरण नमन्।।26।।
गुण सारे एकत्रित होकर, तुममें आन समाए हैं।
इसमें क्या आश्चर्य है कोई, आश्रय अन्य न पाए हैं।।
खोटे देवों के आश्रय से, गर्वित होकर रहते दोष।
नहीं आपकी ओर झाँकते, कभी स्वप्न में हे गुणकोष !।।27।।
तरु अशोक उन्नत है निर्मल, रत्न रश्मियाँ बिखराए।
सुन्दर रूप आपका मनहर, तरुवर का आश्रय पाए।।

ऊर्ध्वमुखी किरणें अम्बर में, तम को दूर भगाती हैं।
नीलांचल पर्वत से मानो, भव्य आरती गाती हैं।।28।।
रंग-बिरंगी किरणों वाला, सिंहासन अद्‌भुत छविमान।
उस पर कंचन काया वाले, शोभा पाते हैं भगवान।।
उच्च शिखर से उदयाचल के, सूर्य रश्मियाँ बिखराए।
किरण जाल का श्रेष्ठ चँदोवा, मानो आभा फैलाए।।29।।
शुभ्र चँवर ढुरते हैं अनुपम, कुन्द पुष्प सम आभावान।
दिव्य देह शोभा पाती है, स्वर्णाभासी कांतीमान।।
कनकाचल के उच्च शिखर से, मानो झरना झरता है।
अपनी शुभ्र प्रभा के द्वारा, मन मधुकर को हरता है।।30।।
चन्द्र कांति सम छत्र त्रय हैं, मणिमुक्ता वाले अभिराम।
सिर पर शोभित होते अनुपम, अतिशय दीप्तीमान ललाम।।
सूर्य रश्मियों का प्रताप जो, रोक रहे होके छविमान।
तीन लोक के ईश्वर अनुपम, कहे गये हो आप महान।।31।।
उच्च स्वरों में बजने वाली, करती सर्व दिशा में नाद।
तीन लोकवर्ति जीवों के, मन में लाती है आह्लाद।।
डंका पीट रही है अनुपम, हो सद्धर्म की जय-जयकार।
गगन मध्य भेरी बजती है, यश गाती है अपरम्पार।।32।।
गंधोदक की वृष्टी करते, देव चलाते मंद पवन।
संतानक मंदार नमेरू, कल्पतरू के श्रेष्ठ सुमन।।
सुन्दर पारिजात आदी के, ऊर्ध्वमुखी होकर गिरते।
पंक्तीबद्ध आदि जिनके ही, मानो दिव्य वचन खिरते।।33।।
तीन लोकवर्ती उपमाएँ, जो कहने में आती हैं।
तनभामण्डल के आगे वह, सब फीकी पड़ जाती हैं।।
कोटि सूर्य सम प्रखर दीप्ति है, फिर भी नहीं जरा आताप।
शीतल चन्द प्रभू के आगे, प्रभाहीन हों अपने आप।।34।।
स्वर्ग मोक्ष के दिग्दर्शक हैं, हे जिनेन्द्र ! तव दिव्य वचन।
तीन लोक में सत्य धर्म को, प्रगटाए सम्यक् दर्शन।।

दिव्य देशना सुनकर करते, भव्य जीव अपना उद्धार।
सुनकर विशद समझ लेते हैं, निज-निज भाषा के अनुसार।।35।।
चरणाम्बुज नख शोभित होते, नभ में जैसे स्वर्ण कमल।
कुमुद मुदित होकर सागर में, शोभा पाते चरण युगल।।
अभिवन्दन के योग्य चरण शुभ, प्रभुवर जहाँ-जहाँ धरते।
उनके पग तल दिव्य कमल की, देव श्रेष्ठ रचना करते।।36।।
धर्म देशना की बेला में, वैभव पाते जो तीर्थेश।
अन्य कुदेवों में वैसा कुछ, देखा गया नहीं लवलेश।।
घोर तिमिर का नाशक रवि जो, दिव्य रोशनी को पाता।
वैसा दिव्य प्रकाश नक्षत्रों, में भी क्या देखा जाता।।37।।
महामत्त गज के गालों से, बहे निरन्तर मद की धार।
जिस पर भौरों का समूह भी, करता हो अतिशय गुंजार।।
क्रोधाशक्त दौड़ता हाथी, जिसका रूप दिखे विकराल।
कभी नहीं कर सकता है प्रभु, तव भक्तों को वह बेहाल।।38।।
तीक्ष्ण नखों से फाड़ दिए हैं, गज के उन्नत गण्डस्थल।
गज मुक्ताओं द्वारा जिसने, पाट दिया हो अवनीतल।।
ऐसा सिंह भयानक होकर, कभी नहीं कर सकता वार।
चरण कमल का प्रभु आपके, जिसने बना लिया आधार।।39।।
प्रलंयकारी आंधी उठकर, फैल रही हो चारों ओर।
उठे फुलिंगे अंगारों की, वायु का भी होवे जोर।।
भुवनत्रय का भक्षण करले, आग सामने आती है।
प्रभू नाम के मंत्र नीर से, क्षण भर में बुझ जाती है।।40।।
क्रोधित कोकिल कण्ठ के जैसा, फण फैलाए काला नाग।
लाल नेत्र कर दौड़ रहा हो, मुख से निकल रहा हो झाग।।
ऐसे नाग के सिर पर चढ़कर, भी आगे बढ़ जाता है।
नाम जाप करने वाले का, नाग न कुछ कर पाता है।।41।।
जहाँ अश्व गज गर्वित होकर, गरज रहे हों चारों ओर।
बलशाली राजा की सेना, चीत्कार करती हो घोर।।

शक्तिहीन नर वहाँ अकेला, जपने वाला प्रभु का नाम।
बलशाली सेना को भी वह, नष्ट करे क्षण में अविराम।।42।।
बर्छी भालों से आहत गज, तन से बहे रक्त की धार।
योद्धा लड़ने को तत्पर है, लहू की सरिता करके पार।।
समरांगण में भक्त आपका, शत्रु सैन्य से पाए ना हार।
आश्रय पाये जो तव पद का, पाए विजय श्री उपहार।।43।।
लहरें क्षोभित हों सिन्धू की, शिखर से जाकर टकराएँ।
नक्र चक्र घड़ियाल भयंकर, बड़वानल भी जल जाएँ।।
सागर में तूफान विकट हो, फँसा हुआ जिसमें जलयान।
छुटकारा पा जाए क्षण में, करे आपका जो भी ध्यान।।44।।
भीषण रोगों से पीड़ित हो, और जलोदर का हो भार।
जीवन की आशा तज दी हो, भय से आकुल होय अपार।।
तव पद पंकज की रज पाकर, तन की मिट जाए सब पीर।
कामदेव के जैसा सुन्दर, भक्त आपका पाए शरीर।।45।।
पग से सिर तक जंजीरों से, जकड़ी हुई है जिसकी देह।
छिले हुए घुटने जंघाएँ, पीड़ाकारी निःसन्देह।।
ऐसे दुस्तर बन्दीजन भी, करके प्रभूनाम का जाप।
कट जाते हैं बन्धन सारे, उनके क्षण में अपने आप।।46।।
सिंह गजेन्द्र नाग रणस्थल, दावानल हो रोग अपार।
सिंधू भय अतिभीषण दुख हो, क्षण भर में पा जाए पार।।
गुण स्तवन वन्दन करता है, विश्वेश्वर का जो धीमान।
भय भी भय से आकुल होकर, करता है उसका सम्मान।।47।।
गुण उपवन से प्रभू आपके, भाँति-भाँति वर्णों के फूल।
चुनकर लाए भक्ति माल को, गूँथे हैं रुचि के अनुकूल।।
भव्य जीव जो सुमनावलि से, अपना कण्ठ सजाते हैं।
'मानतुंग' सम गुण के सागर, 'विशद' मुक्ति पद पाते हैं।।48।।

***

नवदेवताओं की आरती

(तर्ज-इह विधि मंगल....)

नवदेवों की आरति कीजे, नर भव विशद सफल कर लीजे।
प्रथम आरती अर्हत्थारी, कर्म घातिया नाशनकारी। नवकोटि....
द्वितीय आरती सिद्ध अनंता, कर्म नाश होवें भगवंता। नवकोटि....
तृतीय आरती आचार्यों की, रत्नत्रय के सद् कार्यों की। नवकोटि....
चौथी आरती उपाध्याय की, वीतरागरत स्वाध्याय की। नवकोटि....
पाँचवीं आरती मुनिसंघ की, बाह्याभ्यंतर रहित संग की। नवकोटि....
छठवीं आरती जैन धरम की, 'विशद' अहिंसा मई परम की। नवकोटि....
सातवीं आरती जैनागम की, नाशक महामोह के तम की। नवकोटि....
आठवीं आरती चैत्य तिहारी, भवि जीवों की मंगलकारी। नवकोटि....
नौवीं आरती चैत्यालय की, दर्शन करते मिथ्याक्षय की। नवकोटि....
आरती करके वन्दन कीजे, शीश झुकाकर आशीष लीजे। नवकोटि....

अतिशय क्षेत्र चूलगिरि जी की आरती

(तर्ज : भक्ति बेकरार है....)

पार्श्वनाथ दरबार है, अतिशय मंगलकार है।
चूलगिरि जी तीर्थराज की, हो रही जय-जयकार है।। टेक।।
पार्श्वनाथ की मूरत प्यारी, खड्गासन में सोहे जी-2
नेमिनाथ अरु वीर प्रभु जी, जन-जन का मन मोहे जी-2।। पार्श्वनाथ दरबार है..।।1।।
पद्मासन चौबीसी पावन, मंगल करने वाली जी-2
खड्गासन की चौबीसी भी, सोहे अजब निराली जी-2।। पार्श्वनाथ दरबार है..।।2।।
वीर प्रभू जी खड्गासन में, सोहें अतिशयकारी जी-2
चरण कमल भी हैं मन भावन, जो हैं मंगलकारी जी-2 ।। पार्श्वनाथ दरबार है..।।3।।
आदिनाथ अरु भरत बाहुबली, खड्गासन में गाए जी-2
रत्नमयी प्रतिमाएँ पावन, महिमा जो दिखलाएँ जी-2 ।। पार्श्वनाथ दरबार है..।।4।।
देशभूषण गुरु यहाँ पे आके, तीर्थ नया बनवाए जी-2
'विशद' तीर्थ के दर्शन पाने, के सौभाग्य जगाए जी-2 ।। पार्श्वनाथ दरबार है..।।5।।

आरती चूलगिरि के श्री पार्श्वप्रभु की

(तर्ज : जीवन है पानी की बूँद....)

चूलगिरि में पार्श्व प्रभु, महिमा दिखलाए रे।
आरति करने जिन चरणों में, हम सब आये रे।। टेक।।

स्वर्ग से चयकर जन्म लिए, काशी नगरी धन्य किए।
घर-घर में तव जले दिए, देव तभी जयकार किए।।
अश्वसेन माँ वामा हो हो-2, भाग्य जगाए रे।। चूलगिरि में.... ।।1।।

वन में शैर को आप गये, अचरज देखे नये-नये।
तपसी से प्रभु यही कहे, जीवों ने कई कष्ट सहे।।
नाग और नागिन हो-हो-2, क्यों आप जलाए रे।। चूलगिरि में.... ।।2।।

नागों को महामंत्र दिया, मन में प्रभु वैराग्य लिया।
संयम धारण आप किया, केशलुंच निज हाथ किया।।
निज आतम का हो-हो-2, प्रभु ध्यान लगाए रे।। चूलगिरि में.... ।।3।।

जीव कमठ का तब आया, देख प्रभु को गुस्साया।
पत्थर पानी बरसाया, मन में भारी हर्षाया।।
धरणेन्द्र-पद्मावति हो-हो-2, उपसर्ग नसाए रे।। चूलगिरि में.... ।।4।।

प्रभु को केवल ज्ञान जगा, रहा कमठ तब ठगा-ठगा।
प्रभु पद में वह माथ लगा, मिथ्या का फिर भूत भगा।।
विशद कमठ हो-हो-2, मन में पछताए रे।। चूलगिरि में.... ।।5।।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

प्रभु पारसनाथ भगवान, आज थारी आरती उतारूँ।
आरती उतारूँ थारी मूरत निहारूँ-2, प्रभु कर दो भव से पार।। आज.....।। टेक।।
अश्वसेन के राजदुलारे-2, वामा की आँखों के तारे-2 जन्मे हैं काशीराज-आज थारी...
बाल ब्रह्मचारी हितकारी-2, विघ्नविनाशक मंगलकारी-2 जैन धर्म के ताज-आज थारी...
नाग युगल को मंत्र सुनाया-2, देवगति को क्षण में पाया-2 किया प्रभू उपकार-आज थारी...
दीन बन्धु हे ! केवलज्ञानी-2, भव दुखहर्त्ता शिवसुखदानी-2 करो जगत उद्धार-आज थारी...
'विशद' आरती लेकर आये-2, भक्ति भाव से शीश झुकाये-2 जन-जन के सुखकार-आज थारी...
खड्गासन प्रतिमा मनहारी-2, चूलगिरि में मंगलकारी-2 सोहें अतिशयकार-आज थारी...

'ॐ' में विराजित पंच परमेष्ठी की आरती

(तर्ज - भक्ति बेकरार है.....)

पावन श्री ॐकार है, शास्वत अतिशयकार है।
परमेष्ठी वाचक की गाते, आरति मंगलकार है।। टेक।।

परमेष्ठी अरिहन्त हमारे, कर्म घातिया नाशी जी-2 ।
दिव्य देशना देने वाले, केवल ज्ञान प्रकाशी जी-2 ।। पावन श्री.. ।।1।।

नित्य निरंजन अविनाशी श्री, सिद्ध प्रभू कहलाए हैं-2 ।
काल अनादी सिद्ध शिला पर, सुखानन्त प्रगटाए हैं-2 ।। ।। पावन श्री.. ।।2।।

पञ्चाचार का पालन करते, छत्तिस गुण के धारी जी-2 ।
शिक्षा दीक्षा देने वाले, पावन मंगलकारी जी-2 ।। ।। पावन श्री.. ।।3।।

उपाध्याय निर्ग्रन्थ मुनीश्वर, पढ़ते और पढ़ाते हैं-2 ।
ग्यारह अंग पूर्व चौदह का, जो श्रुत ज्ञान जगाते हैं-2 ।। ।। पावन श्री.. ।।4।।

विषयाशा आरम्भ के त्यागी, रत्नत्रय गुणधारी जी-2 ।
ज्ञान ध्यान तप में रहते, 'विशद' कहे अनगारी जी-2 ।। ।। पावन श्री.. ।।5।।

'ह्रीँ' में विराजित चौबीस तीर्थंकर की आरती

(तर्ज - वन्दे जिनवरम्-वन्दे जिनवरम्.....)

जगमग जगमग आरति कीजे, चौबीसों भगवान की।
ह्रीँ के अन्दर शोभा पाते, अतिशय आभावान की।। टेक।।

पद्मप्रभु अरु वासुपूज्य जी, लाल रंग के कहलाए।
सीधी रेखा में द्वय जिनवर, के हमने दर्शन पाए।।
आरति करते आज यहाँ पर, श्री जिन अतिशयवान की।। जगमग.. ।।1।।

श्री सुपार्श्व अरु पार्श्वनाथ जी, ई (ी) में शोभा पाते हैं।
हरित वर्ण के द्वय तीर्थंकर, जग में पूजे जाते हैं।।
आरति करने आए हैं हम, वीतराग गुणवान की ।। जगमग.. ।।2।।

अर्ध चन्द्र (ँ) में चन्द्र प्रभु अरु, पुष्पदन्त जी बतलाए।
धवल वर्ण है देह का जिनकी, अतिशय महिमा दिखलाए।।
आरति करते हैं हम दोनों, अतिशय महिमावान की।। जगमग.. ।।3।।

मुनिसुव्रत अरु नेमिनाथ जी, श्याम बिन्दु (.) में गाए हैं।
मुक्ती पथ के राही जग को, प्रभु सन्मार्ग दिखाए हैं।।
आरति करते आज यहाँ हम, अतिशय कृपा निधान की ।। जगमग.. ।।4 ।।

'ह्ल' के अन्दर सोलह जिनवर, पीतवर्ण के धारी हैं।
छियालिस मूलगुणों को पाते, पूर्ण रूप अविकारी हैं।।
'विशद' आरती करते हैं हम, वीतराग विज्ञान की ।। जगमग.. ।।5 ।।

श्री महावीर स्वामी की आरती

(तर्ज : कंचन की थाली लाया...)

रत्नों के दीप जलाए, चरणों में तेरे आए।
भावों से करने थारी आरती, हो वीरा हम सब...

कुण्डलपुर में जन्म लिए प्रभु, मात पिता हर्षाए।
धन कुबेर ने खुश होकर के, दिव्य रत्न वर्षाए।।
इन्द्र भी महिमा गावे, भक्ति से शीश झुकावे।
भवि जन करते हैं तेरी आरती, हो वीरा..... ।।1 ।।

चैत शुक्ल की त्रयोदशी को, जन्म जयन्ती आवे।
नगर-नगर के नर-नारी सब, मन में हर्ष बढ़ावें।।
प्रभु को रथ पे बैठावें, नाचे गावें हर्षावें।
सब मिल उतारे थारी आरती, हो वीरा..... ।।2 ।।

मार्ग शीर्ष कृष्णा तिथि दशमी, तुमने दीक्षा धारी।
युवा अवस्था में संयम धर, हुए आप अनगारी।।
आतम का ध्यान लगाया, कर्मों को आप नशाया।
श्रावक करते है थारी आरती...हो वीरा ।।3 ।।

दशें शुक्ल वैशाख माह में, केवल ज्ञान जगाये।
कार्तिक कृष्ण अमावश को प्रभु, 'विशद' मोक्ष पद पाए।।
पावापुर है मनहारी, सिद्ध भूमि है- प्यारी।
जिनबिम्बों की करते है हम आरती...हो वीरा ।।4 ।।

चौबीस जिन की आरती

चौबीस जिन की आरती करने, दीप जलाकर लाए।
विशद आरती करने के शुभ, हमने भाग्य जगाए।।
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन् ।। टेक ।।
ऋषभ नाथ जी धर्म प्रवर्तक, अजित कर्म के जेता।
सम्भव जिन अभिनन्दन स्वामी, अतिशय कर्म विजेता ।।
सुमति नाथ जिनवर के चरणों, मति सुमति हो जाए। विशद आरती ...
पद्म प्रभु जी पद्म हरे हैं, जिन सुपार्श्व जी भाई।
चन्द्र प्रभु अरु पुष्पदन्त की, धवल कांति सुखदाई।।
शीतल जिन के चरण शरण में, शीतलता मिल जाए। विशद आरती ...
श्रेयनाथ जिन श्रेय प्रदायक, वासुपूज्य जिन स्वामी।
विमलानन्त प्रभु अविकारी, जग में अन्तर्यामी।।
धर्मनाथ जी धर्म प्रदाता, इस जग में कहलाए। विशद आरती ...
शांति कुन्थु अरु अरह नाथ जी, तीन-तीन पद पाए।
चक्री काम कुमार तीर्थंकर, बनकर मोक्ष सिधाए।।
मल्लिनाथ जी मोह मल्ल को, क्षण में मार भगाए। विशद आरती ...
मुनिसुव्रत जी व्रत को धारे, नमि धर्म के धारी।
नेमिनाथ जी करुणा धारे, पार्श्वनाथ अविकारी।।
वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर कहलाए। विशद आरती ...

मानस्तम्भ की आरती

मानस्तम्भ की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे।। टेक।।
जिनवर चारों दिश में सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें।। मानस्तम्भ..
पूर्व दिशा में जिनवर गाए, वीतरागता जो दर्शाए।। मानस्तम्भ..
दक्षिण दिश की प्रतिमा प्यारी, देखत लागे अतिमनहारी।। मानस्तम्भ..
पश्चिम दिश के श्री जिन स्वामी, गाए पावन अन्तर्यामी।। मानस्तम्भ..
उत्तर के जिनबिम्ब निराले, भव्यों का मन हरने वाले।। मानस्तम्भ..
मानस्तम्भ का दर्शन पाए, क्षण में मान गलित हो जाए।। मानस्तम्भ..
'विशद' भावना हम ये भाएँ, बार-बार जिन दर्शन पाएँ।। मानस्तम्भ..
दीप जलाकर के यह लाए, आरति के सौभाग्य जगाए।। मानस्तम्भ..

"श्री भरतेश्वर स्वामी की आरती"

(तर्ज - इह विधि मंगल आरती कीजे....)

भरतेश्वर की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे ।। टेक ।।
आदिनाथ के पुत्र कहाए, माता नन्दा के सुत गाए।
भरतेश्वर की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे ।।1 ।।
नगर अयोध्या जन्म लिया है, वंश इक्ष्वाकू धन्य किया है ।।2 ।।
चक्ररत्न तुमने प्रगटाया, प्रथम चक्रवर्ती पद पाया ।।3 ।।
छह खण्डों का वैभव पाए, किन्तू जग के भोग ना भाए ।।4 ।।
जल में कमल रहे ज्यों भाई, जीवन में यह वृत्ती पाई ।।5 ।।
राज त्याग कर संयम पाए, अन्तर्मुहूर्त में ज्ञान जगाए ।।6 ।।
अष्टापद से कर्म नशाए, परम मोक्ष पदवी जो पाए ।।7 ।।
'विशद' भावना हम ये भाएँ, कर्म नाशकर ज्ञान जगाएँ ।।8 ।।
अष्ट मूल गुण हम प्रगटाएँ, अष्टापद से मुक्ती पाएँ ।।9 ।।
भरतेश्वर की आरति कीजे, अपना जन्म सफल कर लीजे ।। टेक ।।

क्षेत्रपाल की आरती

आज करे हम क्षेत्रपाल की, आरति मंगलकारी-2 ।
घृत के दीप जलाकर लाए-2, बाबा तेरे द्वार ।।
हो बाबा, हम सब उतारें तेरी आरती ।। टेक ।। हो बाबा.........
छियानवे क्षेत्रपाल की फैली, इस जग में प्रभुताई-2
विजय वीर अपराजित भैरव-2, मणिभद्रादिक भाई
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती ।।1 ।। हो बाबा.........
लाल लंगोट गले में कंठी, लाल दुपट्टा धारी-2
सिर पर मुकुट शोभता पावन-2, कर त्रिशूल मनहारी ।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती ।।2 ।। हो बाबा.........
कानों कुण्डल पैर पावटा, माथे तिलक लगाए-2
बाजूबंद पान है मुख में-2, कूकर वाहन पाए ।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती ।।3 ।। हो बाबा.........

अंगद आदि उपद्रव कीन्हें, तब लंकेश्वर ध्याए-2
सर्व उपद्रव दूर किया तब-2, अतिशय शांती पाए ।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती ।।4 ।। हो बाबा.........
सम्यक्त्वी तुम भक्त जनों के, सारे संकट हरते-2
पुत्रादिक धन सम्पत्ति की-2, वाञ्छा पूरी करते ।।
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती ।।5 ।। हो बाबा.........

पदमावती माता की आरती *(तर्ज : भक्ति बेकरार है..)*

माता का दरबार है, अतिशय मंगलकार है।
आज यहाँ पद्मावति माँ की, हो रही जय-जयकार है ।। टेक ।।
माँ पद्मावति पार्श्वनाथ को, मस्तक ऊपर धारे जी-2 ।
इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र खड़े हैं, माँ पद्मा के द्वारे जी-2 ।।
माता का दरबार है... ।।1 ।।
जो भी माँ की शरण में आए, वह सौभाग्य जगाए जी-2 ।
पुत्र-पौत्र धन सम्पत्ति माँ के, दर पे आके पाए जी-2 ।।
माता का दरबार है... ।।2 ।।
शाकिन-डाकिन भूत भवानी, की बाधा हट जाए जी-2 ।
वात-पित्त कफ रोगादिक से, प्राणी मुक्ती पाए जी-2 ।।
माता का दरबार है... ।।3 ।।
त्रय नेत्री हे पद्मा देवी, तिलक भाल पे सोहे जी-2 ।
मुख की कान्ती अनुपम माँ की, भविजन का मन मोहे जी-2 ।।
माता का दरबार है... ।।4 ।।
दैत्य कमठ का मान गलाया, सुयश विश्व में छाया जी-2 ।
आदि दिगम्बर धर्म बताकर, जिनमत को फैलाया जी-2 ।।
माता का दरबार है... ।।5 ।।
कुक्कुट सर्प वाहिनी माँ के, सहस्त्र नाम बतलाए जी-2 ।
मथुरा में जिन दत्तराय जी, रक्षा तुमसे पाए जी-2 ।।
माता का दरबार है... ।।6 ।।
दीप धूप फल पुष्प हार ले, आरति करने आए जी-2 ।
दर्शन करके विशद आपके, मनवांछित फल पाए जी-2 ।।
माता का दरबार है... ।।7 ।।

श्री पार्श्वनाथ स्तुति

(तर्ज - गुरुवर हम आये हैं....)

हे पार्श्वनाथ स्वामी, हम चरण शरण आये।
इस जग के दुःखों से, अब तो हम घबड़ाये।। टेक।।

सुख की अभिलाषा में, संसार बढ़ाया है।
अपना स्वरूप हमने, प्रभु जान ना पाया हैं।।
सद्ज्ञान जगाने को, हे नाथ ! तुम्हें ध्याये। हे पार्श्व.......

हमने मिथ्यामति से, जग को अपना माना।
तुम जगत हितैषी हो, ना तुमको पहिचाना।।
भव-भव में हे भगवन !, कर्मों से दुख पाए।। हे पार्श्व.......

चौरासी के चक्कर में, जग भ्रमण किया भारी।
प्रभु दर्शन करके भी, हो सके ना अविकारी।।
हे नाथ ! कई प्राणी, तुमने शिव पहुँचाए।। हे पार्श्व.......

बस एक ही इच्छा है, रत्नत्रय निधि पाएँ।
भव सागर में प्रभु जी, अब और ना भटकाएँ।।
तुमसा बनने प्रभु जी, हम महिमा शुभ गाएँ। हे पार्श्व.......

हे नाथ ! हृदय मेरे, सद्ज्ञान की ज्योति जगे।
अब 'विशद' भक्ति में ही, मेरा उपयोग लगे।।
हे प्रभू ! भक्ति से हम, तुम चरणों सिरनाए।। हे पार्श्व.......

भजन

(तर्ज : चलो बुलावा आया है...)

बाबा जिनको याद करें, वो भक्त निराले होते हैं।
बाबा जिनका नाम पुकारें, किस्मत वाले होते हैं।। टेक।।

चलो बुलावा आया है, बाबा ने बुलाया है।
जयपुर नगर में चूलगिरि पर, अतशिय बड़ा दिखाया है।
चलो बुलावा आया है, बाबा ने बुलाया है।।1।।

सारे जग में एक ठिकाना, सारे गम के मारों का।
रस्ता देख रहे हैं बाबा, अपनी आँख के तारों का।।
जिसने नाम लिया पारस का, अतिशय फल वो पाया है।
चलो बुलावा आया है, बाबा ने बुलाया है।।2।।

जय पारस की कहते जाओ, आने-जाने वालों को।
दर्शन पाओ पुण्य कमाओ, छोड़ो जग जंजालों को।।
तेरे द्वार पर जो भी आया, पार वही हो जाता है।
चलो बुलावा आया है, बाबा ने बुलाया है।।3।।

चूलगिरि के द्वारे पर जो, लोग मुरादें पाते हैं।
खाली झोली आते हैं, और भर-भर कर ले जाते हैं।।
मेरी भी खाली झोली, इसको भी अब भर देना।
चलो बुलावा आया है, बाबा ने बुलाया है।।4।।

* * *